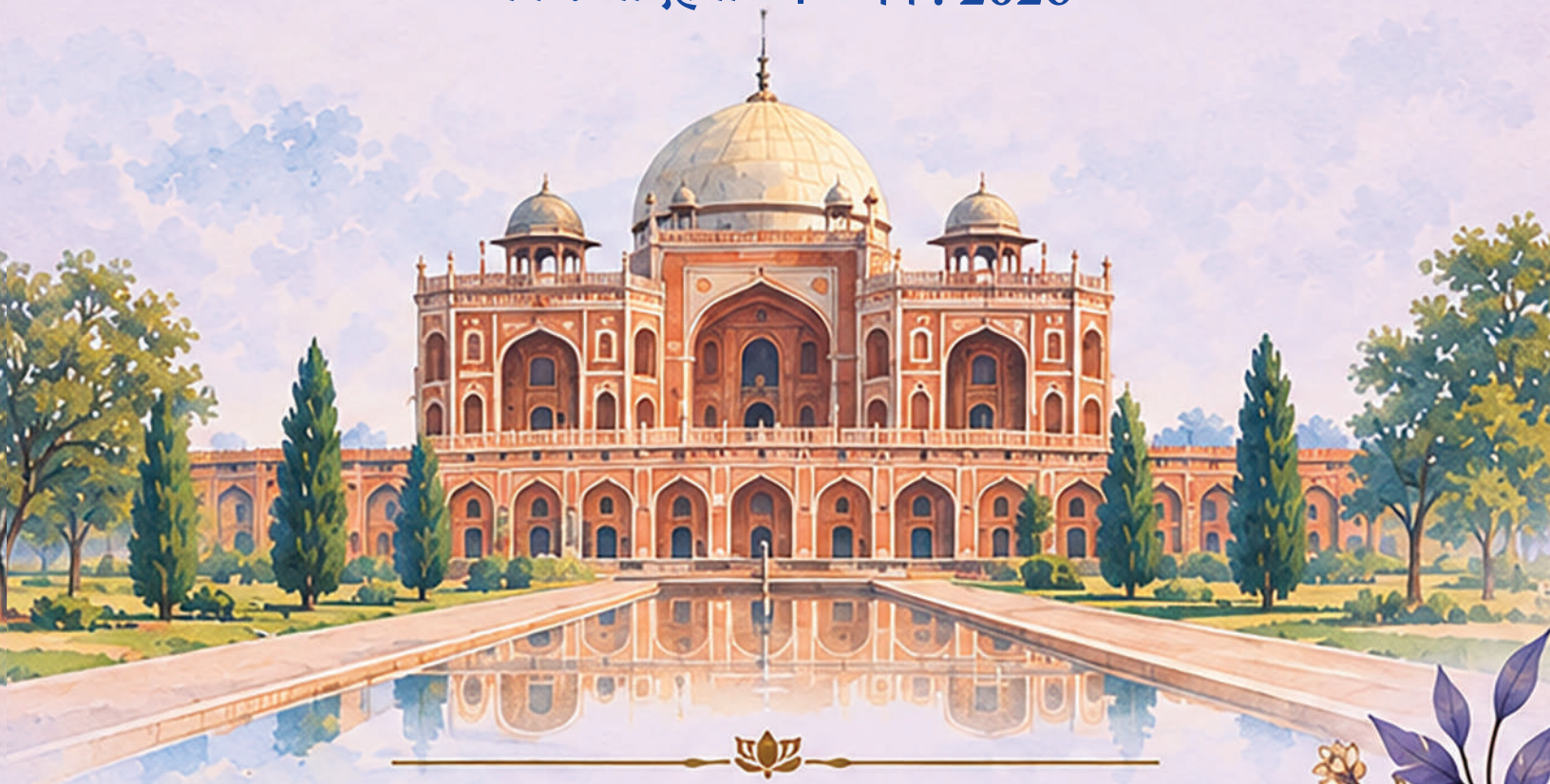
SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

यमुनातीरे

अंक : चौदहवां | वर्ष : 2026



कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा

(वित्त एवं संचार), दिल्ली-110054




हिंदी दिवस एवं छठा अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन
भाषायां संरक्षणं संस्कृते: संवर्धनम्
वंदे मातरम्
राष्ट्रीय गीत के 150 वर्ष
14-15 सितंबर 2026, मुंबई (महाराष्ट्र)

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

यमुनातीरे

अंक : चौदहवां

वार्षिक हिन्दी पत्रिका (वर्ष : 2026)

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (वित्त एवं संचार)
दिल्ली

वार्षिक हिन्दी पत्रिका

अंक : चौदहवां वर्ष : 2026

संरक्षक
खालिद बिन जमाल
महानिदेशक

प्रकाशन परामर्शदाता
टी. इमलिवाबांग कबज़ार
निदेशक (मुख्यालय)

सम्पादक
डॉ शिप्रा पाण्डे
सहायक निदेशक

सह-संपादक
विकास सैनी
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

**इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाएँ, रचनाकारों के व्यक्तिगत विचार व भावनाएँ हैं।
कार्यालय या संपादक मण्डल का रचनाकारों के विचारों से सहमत होना आवश्यक नहीं है।**

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	रचनाकार	पृ.सं.
1.	***संदेश***	खालिद बिन जमाल, महानिदेशक	6
2.	***संदेश***	टी. इमलिवाबांग कबज़ार, निदेशक (मुख्यालय)	7
3.	***संपादकीय***	डॉ. शिप्रा पाण्डे, सहायक निदेशक	8
4.	***साधना व अहंकार***	श्रीमती गीता रानी, वरिष्ट निजी सचिव	13
5.	***खुद से फिर मुलाकात***	श्री संतोष कुमार, लेखापरीक्षक	16
6.	**एक सफर : सुकून की ओर**	श्री विजय कुमार शर्मा, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी	18
7.	***मेरा पहला मोबाइल – Moto G3***	श्री पंकज कुमार जायसवाल, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	20
8.	***स्वाभिमान***	श्री दीपेंद्र देव शुक्ला, लेखापरीक्षक	22
9.	***रिश्ता दिल का***	श्रीमती अर्चिता मिश्र, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	24
10.	***युद्ध परिणाम***	श्री विजय कुमार शर्मा, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी	26
11.	***तेरे बिन यह जिंदगी***	श्री अभिषेक कुमार, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	28
12.	***जीवन का सत्य***	श्री नवीन कुमार, लेखापरीक्षक	30
13.	***माँ!***	सुश्री नमर्ता कोली	33
14.	***प्रार्थना***	मौ. फईम, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	36
15.	***अटल***	श्री आनंद राघव मिश्र, लेखापरीक्षक	38
16.	***तू भी नहीं मैं भी नहीं***	मोहम्मद इमरान खान, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	40
17.	***सपने***	श्री सुबोध कुमार पात्रा, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	42
18.	***नदियों की व्यथा***	श्री सक्षम पाण्डेय, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	44
19.	***नारी : संघर्ष और साहस***	श्री अरुण कुमार, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	47
20.	***सिंहनाद***	श्री अभिषेक कुमार, लेखापरीक्षक	49

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते



प्रिय देशवासियो,

हिंदी दिवस के अवसर पर आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ!

भाषा चंदन की उस सुगंध के समान है, जो हमारी संस्कृति, संस्कार, ज्ञान, परंपरा और राष्ट्रीय चेतना की जीवंत धारा बन जाती है। भारत जैसे बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक देश में हमारी भाषाएँ, उपभाषाएँ और बोलियाँ हमारी सभ्यता की स्मृति, लोकजीवन की संवेदना और राष्ट्रीय एकता की आधारशिला हैं। स्वभाषा व्यक्ति को अपनी जड़ों से जोड़ती है और उसे आत्मविश्वास के साथ अपने विचारों, अनुभवों और आकांक्षाओं को अभिव्यक्त करने की शक्ति देती है।

हमारा भारत भाषाई विविधता और सांस्कृतिक समृद्धि की अनुपम भूमि है। यहाँ प्रत्येक भाषा अपने साथ एक इतिहास, लोकपरंपरा और जीवन–दृष्टि लेकर चलती है। यही भाषाई बहुलता भारत की 'विविधता में एकता' की भावना को सशक्त बनाती है। हिंदी ने इसी विविधता के बीच संवाद, संपर्क और समन्वय की भाषा के रूप में देश के विभिन्न क्षेत्रों, वर्गों और समुदायों को जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हिंदी का विकास भी तभी सार्थक है, जब वह सभी भारतीय भाषाओं के सम्मान, संरक्षण और संवर्धन के साथ आगे बढ़े। हिंदी किसी भाषा की प्रतिस्पर्धी नहीं, बल्कि भारतीय भाषाओं के बीच आत्मीय संवाद और राष्ट्रीय एकात्मता की महत्वपूर्ण कड़ी है।

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' जी ने भाषा की वास्तविक शक्ति को जनता के जीवन और उसके सहज प्रयोग से जोड़ा था। उनका यह भाव हमें स्मरण कराता है कि कोई भी भाषा तभी जीवंत बनती है, जब वह समाज के सामान्य जन के श्रम, संवेदना, आकांक्षा और आत्मविश्वास की भाषा बने। हिंदी की शक्ति भी इसी लोक–संपर्क, सरलता, सहजता और व्यापक स्वीकार्यता में निहित है।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान **स्वराज, स्वदेशी और स्वभाषा** के विचारों ने राष्ट्रीय चेतना को नई ऊर्जा दी। हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने यह अनुभव किया था कि स्वभाषा और स्वाभिमान के बिना स्वराज की संकल्पना अधूरी रहेगी। हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं ने जन–जागरण, राष्ट्रीय एकता और स्वतंत्रता के विचार को जन–जन तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हिंदी ने देश के अनेक हिस्सों में स्वतंत्रता आंदोलन के विचारों, संदेशों और संकल्पों को सामान्य जन तक पहुँचाने की सशक्त संपर्क भाषा के रूप में कार्य किया।

यह वर्ष राष्ट्रीय गीत **'वंदे मातरम' के 150 वर्षों के स्मरण** का भी विशेष अवसर है। आज जब देश **'विकसित भारत@2047'** के संकल्प के साथ आगे बढ़ रहा है, तब 'वंदे मातरम' का भाव हमें यह प्रेरणा देता है कि विकास की यात्रा अपनी विरासत, अपनी भाषाओं, अपनी स्वभाषा और अपने सांस्कृतिक आत्मविश्वास के साथ ही सार्थक होती है।

14 सितंबर, 1949 को संविधान सभा द्वारा हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया जाना स्वतंत्र भारत की लोकतांत्रिक और सांस्कृतिक यात्रा का महत्वपूर्ण क्षण था। यह निर्णय **शासन को जनसामान्य के अधिक निकट** लाने, **लोक–संवाद को सशक्त** करने और **भारतीय भाषाओं के प्रति राष्ट्रीय सम्मान को अभिव्यक्त** करने का प्रतीक था। हिंदी दिवस हमें इसी ऐतिहासिक संकल्प का स्मरण कराता है और राजभाषा हिंदी को जनसेवा, सुशासन और राष्ट्रीय संवाद का प्रभावी माध्यम बनाने की प्रेरणा देता है।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में अमृतकाल का वर्तमान दौर भारत की सांस्कृतिक विरासत, सभ्यतागत आत्मविश्वास और आधुनिक प्रगति के अद्भुत समन्वय का कालखंड है। प्रधानमंत्री जी का **'विकास भी, विरासत भी'** का मंत्र हमें यह दिशा देता है कि आधुनिक भारत का निर्माण अपनी जड़ों से जुड़े रहते हुए ही सशक्त रूप से किया जा सकता है। गुलामी की मानसिकता से मुक्ति का अर्थ यह भी है कि हम अपनी भाषाओं में सोचने, काम करने, सृजन करने और विश्व से संवाद करने का आत्मविश्वास विकसित करें। **इस दिशा में राजभाषा हिंदी की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है।**

इसी दृष्टि से राजभाषा विभाग द्वारा तकनीकी और संस्थागत स्तर पर अनेक महत्वपूर्ण पहलें की गई हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित 'भारती'; भारतीय भाषाओं के बीच संवाद को सहज बनाने की दिशा में एक दूरदर्शी प्रयास है। वर्ष 2024 में स्थापित **'भारतीय भाषा अनुभाग'** केंद्र और राज्यों के बीच पत्राचार तथा प्रशासनिक संवाद को भारतीय भाषाओं में अधिक सुगम बना रहा है। इसी प्रकार, 8.27 लाख से अधिक प्रविष्टियों वाला **'हिंदी शब्द सिंधु'** डिजिटल शब्दकोश हिंदी सहित भारतीय भाषाओं की शब्द–संपदा को जोड़ते हुए ज्ञान–साझाकरण का समृद्ध माध्यम बन रहा है। ये पहलें हिंदी को तकनीक, प्रशासन और ज्ञान–विनिमय की आधुनिक आवश्यकताओं के अनुरूप और अधिक सक्षम बना रही हैं।

हिंदी दिवस केवल भाषा के प्रति गौरव व्यक्त करने का अवसर नहीं, बल्कि स्वभाषा में अपना कार्य, चिंतन और सृजन करने के लिए संकल्पित होने तथा संविधान–निर्माताओं के प्रति कृतज्ञ श्रद्धांजलि अर्पित करने का अवसर भी है। आइए, इस पावन अवसर पर हम हिंदी और सभी भारतीय भाषाओं को विकसित, आत्मनिर्भर और सशक्त भारत की अभिव्यक्ति का प्रभावी माध्यम बनाने का संकल्प लें।

आप सभी को पुनः हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ!

वंदे मातरम!

नई दिल्ली
14 सितंबर, 2026

(अमित शाह)

संदेश



राजभाषा हिंदी के संवर्धन तथा साहित्यिक सृजन की परंपरा को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से हमारे कार्यालय की वार्षिक हिंदी पत्रिका 'यमुनातीरे' का 14वाँ संस्करण आपके समक्ष सादर प्रस्तुत है। यह पत्रिका केवल वार्षिक गतिविधियों और साहित्यिक रचनाओं का संकलन नहीं, बल्कि कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सृजनात्मक सोच, हिंदी के प्रति समर्पण और साहित्यिक अभिरुचि का सजीव परिचय भी है।

किसी भी संस्था की पत्रिका उसकी कार्य-संस्कृति, वैचारिक दृष्टि और रचनात्मक वातावरण का दर्पण होती है। 'यमुनातीरे' ने वर्षों से कार्यालय के प्रतिभाशाली रचनाकारों को अपनी लेखनी के माध्यम से विचारों एवं अनुभवों को अभिव्यक्त करने का अवसर प्रदान किया है। साथ ही, यह हिंदी के संवर्धन तथा राजभाषा के प्रभावी क्रियान्वयन की दिशा में भी एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती रही है।

मुझे विश्वास है कि इस अंक में प्रकाशित लेख, कविताएँ तथा अन्य साहित्यिक रचनाएँ पाठकों को आनंद और प्रेरणा प्रदान करेंगी तथा कार्यालय परिवार के अन्य सदस्यों को भी हिंदी लेखन और साहित्यिक गतिविधियों से जुड़ने के लिए प्रेरित करेंगी।

इस पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मैं संपादक मंडल, सभी रचनाकारों तथा प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से सहयोग देने वाले सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक बधाई देता हूँ। मेरी शुभकामनाएँ हैं कि 'यमुनातीरे' भविष्य में भी इसी प्रकार हिंदी भाषा, साहित्य और सृजन की इस परंपरा को निरंतर समृद्ध करती रहे।

सभी पाठकों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

खालिद बिन जमाल
महानिदेशक

संदेश



विचारों को शब्दों का स्वरूप देने और रचनात्मक लेखन को प्रोत्साहित करने वाली हमारी वार्षिक हिंदी पत्रिका 'यमुनातीरे' का 14वाँ संस्करण आपके सम्मुख है। यह संस्करण हिंदी के प्रति हमारे समर्पण, साहित्यिक अभिरुचि और सृजनात्मक वातावरण का परिचायक है।

प्रशासनिक दायित्वों के साथ-साथ भाषा, साहित्य और संस्कृति के प्रति संवेदनशीलता व्यक्ति के व्यक्तित्व को समृद्ध बनाती है। 'यमुनातीरे' इसी भावना को सशक्त करते हुए हमारे अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपनी रचनात्मक प्रतिभा, विचारों और साहित्यिक अभिव्यक्ति को साझा करने का अवसर प्रदान करती है। यह पत्रिका कार्यालय में साहित्यिक संवाद, सृजनशीलता और हिंदी लेखन को निरंतर प्रोत्साहित करने का माध्यम भी है।

इस अंक में संकलित विविध रचनाएँ न केवल कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की साहित्यिक प्रतिभा का परिचय देती हैं, बल्कि हिंदी के प्रति उनके आत्मीय लगाव और सृजनशीलता को भी प्रतिबिंबित करती हैं। आशा है कि इस अंक की रचनाएँ पाठकों को रुचिकर और प्रेरणादायक लगेंगी।

मैं इस पत्रिका के प्रकाशन में योगदान देने वाले संपादक मंडल, सभी रचनाकारों तथा सहयोगियों के समर्पण और परिश्रम की सराहना करता हूँ। साथ ही, कार्यालय परिवार के सभी सदस्यों से अपेक्षा करता हूँ कि वे भविष्य में भी इसी उत्साह के साथ हिंदी के संवर्धन और साहित्यिक गतिविधियों में सक्रिय सहभागिता निभाते रहेंगे।

'यमुनातीरे' की निरंतर प्रगति एवं इसके सतत् प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

टी. इमलिवाबांग कबज़ार
निदेशक (मुख्यालय)

संपादकीय



सुधी पाठकगण,

'यमुनातीरे' का 14वाँ संस्करण आपके समक्ष प्रस्तुत करना हमारे लिए गौरव का विषय होने के साथ-साथ राजभाषा हिंदी के संवर्धन एवं साहित्यिक चेतना के प्रति हमारी अटूट प्रतिबद्धता का भी प्रतीक है। प्रत्येक संस्करण अपने साथ नई सोच, नए अनुभव और नई रचनात्मक अभिव्यक्तियां लेकर आता है। इस वर्ष भी हमारे कार्यालय परिवार के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक अपनी साहित्यिक प्रतिभा का परिचय दिया है, जिसके परिणामस्वरूप यह अंक विविधता, संवेदनशीलता और सृजनात्मकता से समृद्ध बन सका है।

साहित्य मनुष्य के विचारों, भावनाओं और अनुभवों का सहज माध्यम है। व्यस्त कार्यालयीन दायित्वों के बीच भी जब कोई अपनी लेखनी को समय देता है, तो वह केवल शब्दों का सृजन नहीं करता, बल्कि अपने व्यक्तित्व की संवेदनशीलता और सामाजिक सरोकारों को भी अभिव्यक्त करता है। 'यमुनातीरे' का उद्देश्य ऐसे ही रचनात्मक प्रयासों को प्रोत्साहित करना तथा हिंदी भाषा के प्रति आत्मीयता और साहित्यिक अभिरुचि को निरंतर सशक्त बनाना है।

इस अंक में लेख, कविताएँ तथा विविध विषयों पर आधारित अन्य रचनाएँ सम्मिलित की गई हैं। मुझे विश्वास है कि इन रचनाओं में प्रत्येक पाठक के लिए कुछ न कुछ ऐसा अवश्य निहित है, जो उसके चिंतन को नई दिशा देगा, ज्ञानवर्धन करेगा तथा जीवन के विविध आयामों पर सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने की प्रेरणा प्रदान करेगा।

इस पत्रिका का प्रकाशन सभी रचनाकारों एवं सहयोगियों के समर्पित प्रयासों और सहयोग का प्रतिफल है। मैं सभी रचनाकारों का हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने अपने मूल्यवान लेखन से इस अंक को समृद्ध बनाया। साथ ही, विभागाध्यक्ष, कार्यालयाध्यक्ष तथा उन सभी सहयोगियों के प्रति भी अपनी कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ, जिनके मार्गदर्शन, सहयोग और प्रोत्साहन से इस संस्करण का प्रकाशन संभव हो सका।

एक संपादक के रूप में मेरा प्रयास रहा है कि यह अंक विषय-वस्तु, भाषा और प्रस्तुति तीनों दृष्टियों से संतुलित, सारगर्भित और पठनीय बने। यदि यह प्रयास पाठकों की अपेक्षाओं पर खरा उतरता है, तो मैं अपने प्रयास को सार्थक मानूँगी।

आपके सुझाव एवं रचनात्मक विचार भविष्य के अंकों को और अधिक समृद्ध बनाने में हमारे लिए मार्गदर्शक सिद्ध होंगे। इसी विश्वास के साथ 'यमुनातीरे' का 14वाँ संस्करण आपके समक्ष सादर प्रस्तुत है।

शिप्रा पाण्डे

डॉ. शिप्रा पाण्डे
सहायक निदेशक (राजभाषा)

आपके पत्र



भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)
ऑडिट भवन, रेसकोर्स रोड
गुजरात, राजकोट – 360 001

INDIAN AUDIT AND ACCOUNT DEPARTMENT
OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-I)
AUDIT BHAVAN, RACECOURSE ROAD
GUJARAT, RAJKOT - 360001

संख्या:- हिंदी कक्ष/पत्रिका प्रशंसा-पत्र/2024-ओनवार्ड्स/27 दिनांक:- 02.02.2026

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (वित्त व संचार)
नई दिल्ली – 110054

विषय: हिंदी वार्षिक पत्रिका "यमुनातीरे" के 13 वें अंक की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी वार्षिक पत्रिका **'यमुनातीरे"** का 13 वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुआ। सर्वप्रथम इसके लिए सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका की साज-सज्जा अत्यंत आकर्षक एवं कार्यालय गतिविधियों की छवियाँ मनमोहक है। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ रुचिकर,भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण हैं।

श्रीमति गीता मेहता की **धैर्य एवं बुद्धिमता -एक दूसरे के पूरक**, श्रीमति गीता रानी की **विडम्बना**, मोहम्मद इमरान खान की **दैनिक यात्री**, विपज कुमार शर्मा की **एक अनमोल तोहफा**, शमीम अहमद की **ऑडिट का डर** एवं सुश्री भव्या सक्सेना की **द्वंद** आदि रचनाएँ भी विशेषरूप से प्रशंसनीय है।

पत्रिका के इस अंक के सफल संपादन हेतु संपादक मण्डल एवं सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। आशा है कि पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी की दशा एवं दिशा में उत्तरोत्तर प्रगति होगी।

भवदीय

सहायक निदेशक (राजभाषा)

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) का कार्यालय, झारखण्ड, राँची
Office of the Principal Accountant General (Audit), Jharkhand, Ranchi

संख्या: रा.भा.अनु./ले.प./90/पत्रिका-पावती/2025-26/176 दिनांक:10-11-2025

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (वित्त एवं संचार),
दिल्ली- 110 054

विषय: हिंदी गृह पत्रिका "यमुनातीरे" के तेरहवें अंक की ई-प्रति की पावती का प्रेषण के संबंध में।

महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका "यमुनातीरे" के तेरहवें अंक की ई-प्रति की प्राप्ति हुई है। धन्यवाद!

पत्रिका का मुख और आंतरिक पृष्ठ बहुत ही सुंदर और आकर्षक है एवं मुद्रण कार्य उच्च स्तरीय है। साथ ही, पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ विशेषकर सुश्री गीता रानी की कृति "विडम्बना", श्री अरुण कुमार की "नौकरी और संसार", श्री विजय कुमार शर्मा की "बचपन-एक अनमोल तोहफा", श्री रिंकू द्वारा रचित "ज़ुल्मीदों का सूरज", श्री शमीम अहमद की रचना "ऑडिट का डर" आदि रोचक एवं ज्ञानवर्धक प्रकृति की हैं।

पत्रिका के सफल संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,

सहायक निदेशक (रा.भा.)

दूरभाष/Telephone: 0651-2411670/2413690 फैक्स/Fax: 0651-2412517/2413701 ई-मेल/e-mail: agaujharkhand@cag.gov.in

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी), जम्मू एवं कश्मीर, श्रीनगर
O/o Principal Accountant General (A & E), Jammu & Kashmir, Srinagar
क्रमांक: हिंदी प्रकोष्ठ/प्रमले (ले.व ह.)/हिंदी गृह पत्रिका-समीक्षा/2025-26/53 दि. 03.12.2025

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा),

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (वित्त एवं संचार),

दिल्ली-110 054

विषयः गृह पत्रिका 'यमुनातीरे' के तेरहवें अंक की प्राप्ति के संबंध में।

महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'यमुनातीरे' के तेरहवें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई है। सादर धन्यवाद। पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई। राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार हेतु यह एक सराहनीय प्रयास है।

पत्रिका में संकलित रचनाएं जैसे सुश्री गीता मेहता, सहायक निदेशक (राजभाषा) की रचना 'धैर्य और बुद्धिमताः एक दूसरे के पूरक', सुश्री पल्लवी शर्मा, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी का लेख 'बनारस', सुश्री गीता रानी, वरिष्ठ निजी सचिव, का लेख 'विहम्बना', श्री मोहम्मद इमरान खान, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी का लेख 'दैनिक यात्री', श्री विजय कुमार शर्मा, कनिष्ठ अनुवादक का लेख 'बचपनः एक अनमोल तोहफा' एवं श्री संतोष कुमार', लेखापरीक्षक की रचना 'बुलबुला' अत्यंत रोचक व ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका की साज-सज्जा व मुद्रण भी अति उत्तम है। पत्रिका के उज्जवल भविष्य के लिए हमारी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

यह पत्र सक्षम अधिकारी के अनुमोदन से जारी किया जा रहा है।

भवदीय,

सहायक निदेशक (राजभाषा)

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय, ओडिशा, पुरी शाखा, पुरी
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E), ODISHA, PURI
BRANCH, PURI-752003

सं.-प्रशंसा पत्र/09/2025-26/107 दिनांक:- १५ .11.2025

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा),
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (वित्त एवं संचार),
दिल्ली-110054

विषय : हिन्दी पत्रिका 'यमुनातीरे' के तेरहवें अंक की प्राप्ति के संबंध में।

महोदया/महोदय,

आपकी हिन्दी पत्रिका "यमुनातीरे" के 13वें अंक की प्राप्ति हुई। धन्यवाद।

"यमुनातीरे" उत्कृष्ट रचनाओं का सुन्दर संकलन है। पत्रिका के मुख्य पृष्ठ सहित अन्य कार्यक्रमों के चित्र अत्यंत आकर्षक, दर्शनीय व अनुभूतिपूर्ण होने के साथ-साथ पत्रिका को और अधिक सुंदरता प्रदान कर रहे हैं। पत्रिका में निहित संपूर्ण रचनाएँ पठनीय, रोचक, ज्ञानवर्धक एवं महत्वपूर्ण संदेशों से परिपूर्ण है। इनमें से "कटु सत्य", "दैनिक यात्री", "एक अनमोल तोहफा" और "ऑडिट का डर" विशेष अच्छी हैं। आशा है कि यह पत्रिका आगे भी अपने रोचक विषयों से पाठकों का ज्ञानवर्धन एवं राजभाषा के प्रचार-प्रसार में सार्थक मंच उपलब्ध कराती रहेगी।

पत्रिका के संपादक मण्डल के सभी सदस्यों एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय

Mulagada Aari
14-11-2025
वरिष्ठ लेखा अधिकारी, हिन्दी कक्ष

MOUSUMI CHOUDHARY < mousumic.asm.au@cag.gov.in >
Wed, 17 Dec 2025 3:49:03 PM +0530

To "RAJBHASHA DELHI"<rajbhasha.del.fnc@cag.gov.in>
Tags Magazine

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा),
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (वित्त एवं संचार),
नई दिल्ली -110054

विषय: हिन्दी पत्रिका 'यमुनातीरे' के तेरहवें अंक की प्राप्ति के संबंध में।

महोदया,

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (वित्त एवं संचार),नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित हिन्दी ई-पत्रिका 'यमुनातीरे' के तेरहवें अंक की प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका में समाविष्ट रचनाएँ सराहनीय हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ भी अत्यंत मनोहर है। राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए व पत्रिका के प्रकाशन हेतु आपका पत्रिका परिवार विशेष बधाई का पात्र है।

'यमुनातीरे' पत्रिका के उज्जवल भविष्य की शुभकामनाओं सहित।

भवदीया,
मौसमी चौधरी
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) असम

भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग,
कार्यालय: प्रधाननिदेशक लेखापरीक्षा, वित्त व संचार दिल्ली
शाखा: वित्त व संचार लेखापरीक्षा कार्यालय
बसवा भवन, दूसरा तल, बसवेश्वरा सर्किल, बेंगलुरु-560001
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT,
OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT, FINANCE AND COMMUNICATIONS DELHI
BRANCH: FINANCE AND COMMUNICATIONS AUDIT OFFICE
BASAVA BHAVAN, BASAVA CIRCLE, BENGALURU-560001
(ईमेल : brpbangalore@cag.gov.in, फोन: +९१ -८८० -२२२ ६२३४१)
(Email: brpbangalore@cag.gov.in, Phone: +91-080-22262341)
सत्यमेव जयते

सं.हिं.क./हिं.पत्रि.पा./2025-26/ 86 दिनांक: 30.10.2025

सेवा में

सहायक निदेशक (राजभाषा),
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (वित एवं संचार),
दिल्ली-110154

विषयः वार्षिक गृह पत्रिका *'यमुनातीरे'* के 13वें अंक की पायती प्रेषण के संबंध में।

महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित होने वाली वार्षिक गृह पत्रिका *'यमुनातीरे'* के 13वें अंक की एक ई-प्रति प्राप्त हुई। जिसमें पृष्ठ 26 तथा 35 पर इस कार्यालय के श्री अरूण कुमार, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी की 'नौकरी और मेरा संसार' तथा श्रीमती वीणा सुधीर नाईक, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी की 'मैं नदी हूं' का प्रकाशन किया गया है। पत्रिका में कविताओं को स्थान देने हेतु धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं पठनीय एवं सराहनीय हैं।

आशा करता हूं कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। सभी रचनाकारों को हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,
Digitally signed by Uday Pratap Singh
Date: 30-10-2025 11:45:57
सहायक निदेशक (राजभाषा)

सं/हिंदीअनुभाग/पावतीपत्रिकाओंपरप्रतिक्रिया//2022-23 I/1173801/2025

कार्यालय- महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-II, महाराष्ट्र, नागपुर

O/o the Accountant General (Audit)-II, Maharashtra, Nagpur-440001

सं.हि.अनु./म.ले.प.(ले.प.-II)/प्रतिक्रिया/20/2025-26/जा.क्र. दिनांक: 24/10/2025

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय- महानिदेशक लेखापरीक्षा (वित्त एवं संचार)
दिल्ली
विषय:- हिंदी पत्रिका "यमुनातीरे" के 13वें अंक की पावती के संबंध में |

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "यमुनातीरे" के 13वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद | पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कविताएं, उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेषकर सुश्री गीता रानी, वरिष्ठ निजी सचिव की कहानी 'विडम्बना', श्री आशुतोष कुमार श्रीवास्तव, व.ले.प.अ. का लेख 'बीज का महत्व', श्री मोहम्मद इमरान खान, स.ले.प.अ. का लेख 'दैनिक यात्री', श्री आनंद राघव मिश्रा, लेखापरीक्षक की कविता 'खुली आँखों से देखा एक सपना', श्री संतोष कुमार, लेखापरीक्षक की कविता 'बुलबुला', आदि रचनाएँ उल्लेखनीय एवं सराहनीय हैं |

पत्रिका का मुखपृष्ठ अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

(उप महालेखाकार/ प्रशासन के अनुमोदन से जारी)

भवदीया,

Digitally signed by
Priyanka B. Goswami
Date: 24-10-2025
11:25:30

सहायक निदेशक/राजभाषा

हिं.क./हिंदीपत्रिकासमीक्षा/2020-21/(हिं.डा.क्र.25/14.09.2021 I/1173583/2025

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)पंजाब,
चंडीगढ़-160017
OFFICE OF THE
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT) PUNJAB,
CHANDIGARH-160017
फोन : 0172-2783168, फैक्स 0172-2703149
Email-agaupunjab@cag.gov.in

क्रमांक-प्र.अ./हिंदीपत्रिकासमीक्षा/2025-26/I/1173583/2025 दिनांक:24-10-2025

सेवा में

सहायक निदेशक(राजभाषा)
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा(वित्त एवं संचार)
दिल्ली -110054

विषय:- हिंदी पत्रिका 'यमुनातीरे' के 13वें अंक की समीक्षा।

महोदया,

आपके कार्यालय से प्रकाशित पत्रिका 'यमुनातीरे' के 13वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, पत्रिका हेतु सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएँ उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। श्रीमती गीता मेहता की "धैर्य और बुद्धिमत्ता-एक दूसरे के पूरक", श्री मुकेश कुमार सक्सेना की 'कटुसत्य', श्रीमती गीता रानी की "विडम्बना" एवं श्री विजय कुमार शर्मा की "वसंतपंत: एक अनमोल तोहफा" आदि रचनाएँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। पत्रिका की साज-सज्जा एवं विषयवस्तु का सुंदर प्रस्तुतिकरण अत्यंत प्रशंसनीय है। राजभाषा हिंदी की सृजनशीलता के उत्थान एवं कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने हेतु आपका यह प्रयास सराहनीय है।

पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं

भवदीया

EKTA
सहायक निदेशक (राजभाषा)

हिंदीपक्ष/अन्यपत्रिकापावती/जयाब/2024-25/165 I/1170419/2025

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) झारखण्ड का कार्यालय,
Office of the Pr. Accountant General (A&E), Jharkhand,
पो.: डोरण्डा, राँची- 834002, PO: Doranda, Ranchi -834002
दूरभाष/Telephone: 0651-2412942, 2412582, फैक्स/ Fax: 0651-2411745
ई-मेल/Email : agaejharkhand@cag.gov.in

पत्रांक :- राजभाषा/हिंदी पत्रिका/पावती/I/1170419/2025 दिनांक : 17-10-2025

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (वित्त एवं संचार)
दिल्ली- 110054

विषय : राजभाषा हिंदी पत्रिका 'यमुनातीरे' के 13वें अंक की पावती का प्रेषण।

महोदय /महोदया ,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित राजभाषा हिंदी पत्रिका 'यमुनातीरे' के 13वें अंक का ई-संस्करण प्राप्त हुआ। धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं आंतरिक साज-सज्जा सुंदर एवं अत्यन्त आकर्षक है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं विशेष रूप से निम्न रचनाएं अभूतपूर्व हैं-

क्रम संख्या	रचना	रचनाकार
1.	विडंबना	श्रीमती गीता रानी
2.	द्वंद्व	सुश्री भाव्या सक्सेना
3.	आँखें	श्री नवीन कुमार

साथ हीं, अन्य सभी रचनाएं रोचक एवं ज्ञानवर्धक है। आशा है कि यह पत्रिका हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका के उत्तरोतर प्रगति की हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,
Digitally signed by
Sunil Kumar Shaw
Date: 17-10-2025
17:59:18

सहायक निदेशक (राजभाषा)

सं.लेप.II(हिंदीकक्ष)/पत्रिका/2023-24 I/1172515/2025

महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) का कार्यालय
केरल, तिरुवनंतपुरम - 695 001

OFFICE OF THE
ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-II)
KERALA, THIRUVANANTHAPURAM - 695 001

सं.लेप.II/हिंदी कक्ष/पत्रिका/2025-26 दिनांक : 22-10-2025

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा)
महानिदेशक लेखापरीक्षा (वित्त एवं संचार) का कार्यालय
दिल्ली

विषय :- पत्रिका की पावती – बाबत्

महोदया,

आपके कार्यालय की वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका "यमुनातीरे" के 13वें अंक के ई-संस्करण की प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का कलेवर व रूपरेखा अत्यधिक आकर्षक है और संपूर्ण सामग्री उत्कृष्ट और ज्ञानप्रद है। विशेषकर श्री मोहम्मद इमरान खान का लेख 'दैनिक यात्री', सुश्री पल्लवी शर्मा का लेख 'बनारस', सुश्री गीता रानी का लेख 'विडम्बना' तथा श्री अरुण कुमार की कविता 'नौकरी और मेरा संसार' एवं श्री मुकेश कुमार सक्सेना की कविता 'कटुसत्य' विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं। पत्रिका की सभी रचनाएँ लेखकों की सृजनात्मकता एवं हिंदी के प्रति रुचि को दर्शाती हैं। सार्थक सामग्री के चयन हेतु बधाई।

पत्रिका को सुरुचिपूर्ण एवं उपयोगी बनाने के लिए संपादकीय मंडल को बधाई एवं पत्रिका के अगले अंक के लिए अग्रिम शुभकामनाएँ।

भवदीया,
Digitally signed by
A M Bhadrambika
Date: 22-10-2025
16:55:03

सहायक निदेशक(राजभाषा)

दूरभाष / Telephone :0471 - 2330899 ई मेल / e-mail : agaekerala2@cag.gov.in फैक्स / Fax - 0471-2332022
वेबसाइट / Website : https://cag.gov.in/ag2/kerala/en

हिंदीपत्रिका/समीक्षा/4-10/2023-24/ I/1172760/2025

कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी) पंजाब एवं यू.टी.,
सेक्टर-17ई, चंडीगढ़ - 160017
OFFICE of THE ACCOUNTANT GENERAL (A & E) PUNJAB & U.T.,
Sector-17E, CHANDIGARH – 160017
फोन (Phone): 0172- 2702906, 2703117, 2709576,
ई-मेल(E-mail)- agaepunjab@cag.gov.in

सं.- रा.भा.अनु./पत्रिका समीक्षा/पत्र-10/2025-26/ दिनांक: 23/10/2025

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा),
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (वित्त एवं संचार),
दिल्ली - 110054

विषय: हिन्दी पत्रिका 'यमुनातीरे' के 13वें अंक की पावती प्रेषित करने के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका **'यमुनातीरे'** के 13वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रुचिकर, भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ अति मनोहर एवं आकर्षक है।

पत्रिका में श्रीमती ज्योति दीक्षित, सहायक निदेशक (राजभाषा) की रचना **'माँ'**, श्री आनंद राघव मिश्र, लेखापरीक्षक की रचना **'खुली आंखों से देखा है एक सपना'** तथा श्री नवीन कुमार, लेखापरीक्षक की रचना **'आंखें'** विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं। पत्रिका को सुरुचिपूर्ण एवं उपयोगी बनाने हेतु संपादकीय परिवार ने पूर्ण प्रयास किए हैं।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

यह पत्र उपमहालेखाकार (प्रशा.) महोदया के अनुमोदन से जारी है।

भवदीय
Digitally signed by
Rakesh Ranjan Mishra
Date: 23-10-2025
09:53:02
सहायक निदेशक (राजभाषा)

वित्त व संचार लेखापरीक्षा कार्यालय, कटक
FINANCE & COMMUNICATION AUDIT OFFICE, CUTTACK
बराबती स्टेडियम, कटक -753001
(ईमेल : hoptcuttack@cag.gov.in, फोन +91-671-2301133, 2301122, 2301144
Barabati Stadium, Cuttack-753001
(Email: hoptcuttack@cag.gov.in, Phone: 0671-2301133, 2301122,2301144

संख्या: प्रशासन/सी-323/ I/1159803/2025 दिनांक: 10-10-2025

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा कक्ष),
महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय,
वित्त व संचार,
दिल्ली-110054

विषय: आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका "यमुनातीरे" के 13वें अंक की पावती एवं सुझाव के संदर्भ में।

महोदया/महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित राजभाषा पत्रिका "यमुनातीरे" के 13वें अंक की एक प्रति हमारे कार्यालय को प्राप्त हुई । इस पत्रिका में इस कार्यालय के कर्मियों का भी योगदान बढ़ चढ़ कर रहा तथा इसकी एक प्रति भेजने हेतु आपका हार्दिक आभार।
पत्रिका की साज-सज्जा एवं मुखपृष्ठ अति उत्तम तथा सराहनीय है एवं इस पत्रिका में समाहित रचनाएँ ज्ञानवर्धक, उपयोगी तथा उच्चकोटी की है। पत्रिका में समाहित शब्द भी अत्यन्त सरल एवं सार्थक है जो अपने शब्दों से पाठक को अपनी ओर आकर्षित कर सकती है।

पत्रिका के बहुमुखी विकास के लिए संपादक मंडल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं विकास हेतु हार्दिक शुभकामनायें ।

भवदीय,
प्रभारी वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

Digitally signed by
Gyana Ranjan Panda
Date: 10-10-2025
15:11:54

साधना व अहंकार



श्रीमती गीता रानी
(वरिष्ठ निजी सचिव)
केन्द्रीय कार्यालय

मनुष्य के जीवन में दो शक्तियाँ हमेशा साथ-साथ रहती हैं—अहंकार और साधना। अहंकार मनुष्य को स्वयं तक सीमित कर देता है, जबकि साधना उसे ऊँचाइयों तक पहुँचाती है। जहाँ अहंकार 'मैं' की भावना को बढ़ाता है, वहीं साधना उसे 'हम' और 'समर्पण' का मार्ग दिखाती है।

अहंकार वह स्थिति है, जब व्यक्ति अपने ज्ञान, धन, पद, सौंदर्य और शक्ति पर अत्यधिक गर्व करने लगता है। धीरे-धीरे उसे लगने लगता है कि वही सर्वश्रेष्ठ है। यही भावना उसे दूसरों से दूर कर देती है। अहंकारी व्यक्ति आलोचना सहन नहीं कर पाता और छोटी-सी बात पर क्रोधित हो जाता है। इतिहास में अनेक उदाहरण मिलते हैं, जहाँ अहंकार ने बड़े-बड़े राजाओं और विद्वानों का पतन किया है।

इसके विपरीत साधना आत्मशुद्धि और आत्मविकास का मार्ग है। साधना केवल पूजा-पाठ तक सीमित नहीं होती, बल्कि अपने विचारों, व्यवहार और कर्मों को श्रेष्ठ बनाने का निरंतर प्रयास भी साधना ही है। जब व्यक्ति विनम्रता, धैर्य और अनुशासन को अपनाता है, तब उसका मन शांत और स्थिर होता है।

अहंकार व्यक्ति को भीतर से कमजोर बनाता है, जबकि साधना उसे आंतरिक शक्ति प्रदान करती है। साधना का सबसे बड़ा गुण यही है कि वह व्यक्ति को विनम्र बनाती है। संत कबीर जी, जो एक महान संत थे, विनम्रता और साधना के अद्भुत उदाहरण रहे हैं। उनकी महानता से जुड़ी एक कथा इस संदर्भ में अक्सर याद आती है—

संत कबीर जी गाँव के बाहर एक झोपड़ी बनाकर अपने पुत्र कमाल के साथ रहते थे। संत कबीर जी का प्रतिदिन का नियम था कि वे नदी में स्नान करने के बाद गाँव के सभी मंदिरों में जल चढ़ाते और दोपहर बाद भजन में बैठते थे। देर शाम को ही वे घर लौटते थे।

एक दिन वे अपने नित्य नियम के अनुसार गाँव में गए हुए थे। उसी समय पास के गाँव के एक जमींदार के इकलौते युवा पुत्र का अचानक निधन हो गया। किसी ने कहा कि गाँव के बाहर एक संत रहते हैं, शायद वे कुछ सहायता कर सकें। सभी लोग कबीर जी की कुटिया पर पहुँचे, लेकिन वहाँ संत नहीं मिले। वे निराश होकर लौटने लगे, तभी कमाल वहाँ आ गया। उसने लोगों से परेशानी का कारण पूछा।

लोगों ने युवक की मृत्यु के बारे में बताया। कमाल कुछ समय के लिए असमंजस में पड़ा, फिर उसने सोचा कि एक प्रयास करके देखना चाहिए। उसने अपने कमंडल से जल लिया, शव की तीन परिक्रमा की, तीन बार गंगाजल का छिड़काव किया

और तीन बार राम नाम का स्मरण किया। कुछ ही समय में युवक जीवित हो उठा। लोगों की खुशी का ठिकाना नहीं रहा।

जब लोग प्रसन्न होकर लौट रहे थे, तभी कबीर जी ने उन्हें देखा और आश्चर्यचकित हुए। घर लौटकर उन्होंने कमाल से पूछा कि यह सब कैसे हुआ। कमाल ने कहा, "आप कई दिनों से तीर्थ यात्रा पर जाने की बात कर रहे थे, अब आप चले जाइए, यहाँ मैं सब संभाल लूँगा।"

कबीर जी ने पूछा, "तुम क्या करोगे?"
कमाल ने गर्व से कहा, "मैं बीमारों को ठीक कर सकता हूँ और मृतकों को जीवित कर सकता हूँ।"

कबीर जी समझ गए कि कमाल को सिद्धि तो प्राप्त हो गई है, लेकिन उसके मन में अहंकार आ गया है। उन्होंने सोचा कि यदि अहंकार बना रहा तो उसकी साधना समाप्त हो जाएगी। इसलिए तीर्थ यात्रा से पहले कमाल के अहंकार को दूर करना आवश्यक है।

कबीर जी ने कहा, "ठीक है, आने वाली पूर्णिमा को भजन का आयोजन करके मैं तीर्थ यात्रा पर निकल जाऊँगा। तुम कुछ संतों को मेरी चिट्ठी देकर आमंत्रित कर आओ।"

कबीर जी ने चिट्ठी में लिखा—
कमाल भयो कपूत,
कबीर का कुल गयो डूब।

कमाल जब चिट्ठी लेकर संतों के पास पहुँचा तो संतों ने बात समझ ली। उन्होंने कमाल से पूछा कि अचानक भजन का आयोजन क्यों रखा गया है। कमाल ने अहंकारपूर्वक बताया कि अब वह सब संभाल सकता है, इसलिए कबीर जी तीर्थ यात्रा पर जाना चाहते हैं।

संतों ने पूछा, "तुम क्या कर लेते हो?"

कमाल ने उत्साह से कहा, "मैं बीमारों को ठीक कर सकता हूँ और मृतकों को जीवित कर सकता हूँ।"

संत ने कहा, "आज रात यहीं रुक जाओ और अपना चमत्कार हमें भी दिखाओ।" आसपास के गाँवों में यह बात फैला दी गई। शाम होते-होते कई लोग वहाँ पहुँच गए। संत ने कमाल से कहा कि इन लोगों की परेशानी दूर कर दो।

इतने लोगों को देखकर कमाल घबरा गया और बोला, "इतने लोगों का उपचार करना मेरे लिए संभव नहीं है।" संत ने कहा, "जब ये लोग आशा लेकर आए हैं तो इन्हें निराश लौटाना उचित नहीं होगा।"

इसके बाद संत ने गंगाजल लिया, लोगों पर छिड़का और राम नाम का स्मरण किया। सभी लोग ठीक होकर चले गए।

संत ने कहा, "अब हम भजन में आएँगे। पास के गाँव में संत सूरदास जी भी रहते हैं, उन्हें भी बुला लाओ।"

कमाल मन ही मन सोचने लगा कि संत ने इतने लोगों को एक ही बार में कैसे ठीक कर दिया, जबकि उसे कई बार प्रयास करना पड़ा था।

जब कमाल संत सूरदास जी की कुटिया पहुँचा और सारी बात बताने लगा, तभी सूरदास जी ने कहा, "जल्दी जाओ बेटा, नदी में कोई बहा जा रहा है, उसे बचाओ।"

कमाल तुरंत नदी की ओर दौड़ा और देखा कि सचमुच एक युवक नदी में बह रहा था। उसने उसे बचाकर बाहर निकाला और कुटिया की ओर चल पड़ा। तभी उसे याद आया कि सूरदास जी तो नेत्रहीन हैं, फिर उन्हें नदी में बहता हुआ युवक कैसे दिखाई दिया?

कुटिया पहुँचने पर उसने देखा कि युवक की हालत गंभीर थी।

सूरदास जी ने उस पर जल के छींटे डाले और केवल 'रा' शब्द ही बोल पाए कि युवक उठ खड़ा हुआ। यह देखकर कमाल आश्चर्यचकित रह गया। उसे अपनी गलती का एहसास हुआ। उसने कबीर जी की चिट्ठी खोली और सब कुछ समझ गया।

कमाल वापस अपनी कुटिया में आया और संत कबीर जी के चरणों में गिर पड़ा। उसने कहा, "मैं समझ गया कि मुझे अभी बहुत कुछ सीखना है। मेरे अंदर जो अहंकार आ गया था, उसे दूर करना है।"

कथा का तात्पर्य यही है कि साधना के मार्ग पर अहंकार का कोई स्थान नहीं होता। सच्ची साधना वही है, जो व्यक्ति को विनम्र, धैर्यवान और दूसरों के प्रति समर्पित बनाए।



खुद से फिर मुलाकात



श्री सन्तोष कुमार
(लेखापरीक्षक)
केन्द्रीय कार्यालय

खुद को पा लेना और ईश्वर का साक्षात्कार कर लेना—दोनों ही जीवन के सबसे पवित्र अनुभवों में गिने जाते हैं। शायद कोई सच्चा योगी, कोई तपस्वी या कोई विरला प्रेमी ही इस अनुभूति को पूर्ण रूप से महसूस कर पाता होगा। संभवतः यही सच्चे प्रेम की सबसे बड़ी पहचान भी है। चारों ओर दृष्टि घुमाइए, हर दिशा में प्रेम का रंग बिखरा दिखाई देगा। किताबों में, इशारों में, टीवी के पर्दे पर, फूलों की खुशबू में, मानवीय व्यवहार में, तन्हाइयों में और अनगिनत ख्यालों में—प्रेम किसी न किसी रूप में उपस्थित है।

प्रेम पर असंख्य उपन्यास लिखे गए, अनगिनत गीत रचे गए। किंतु एक रोचक तथ्य यह है कि मिलन के गीतों की अपेक्षा बिछड़ने के बाद लिखे गए गीत और कहानियाँ लोगों के दिलों को कहीं अधिक गहराई से छू जाती हैं। शायद इसलिए कि हममें से लगभग हर व्यक्ति जीवन के किसी न किसी मोड़ पर इस अनुभव से अवश्य गुजरता है। यहीं से एक साधारण व्यक्ति की कल्पनाशीलता धीरे-धीरे दम तोड़ने लगती है और उसे इसका एहसास भी नहीं होता। सोशल मीडिया ने दूरियाँ घटा दीं और बदलते सामाजिक परिवेश ने कम उम्र में रिश्ते बनने



के अवसर बढ़ा दिए। परिणामस्वरूप नई पीढ़ी प्रेम, आकर्षण और फिर टूटन के अनुभवों से पहले ही रूबरू होने लगी है। जब कम उम्र में ही दिल टूटता है, तब दर्द के साथ ऐसे विचार भी जन्म लेने लगते हैं जिनमें निराशा, क्रोध और आत्मविनाश की संभावनाएँ छिपी होती हैं। कई बार संभलने का अवसर भी नहीं मिल पाता। फिर भी एक सत्य ऐसा है जिससे शायद ही कोई बच पाया हो। मन के किसी कोने में हम सभी उस दिन से डरते हैं, जब कोई अपना साथ छोड़ देगा। यह भय अनकहा होता है, पर हमेशा मौजूद रहता है। हमारा विवेक हमें समझाने की कोशिश करता है कि ऐसे सपने मत देखो जिन्हें न किसी की फितरत और न ही यह संसार हमेशा सच होने देगा। यदि ऐसा समय आए तो धैर्य रखिए। कुछ दिनों की पीड़ा के बाद जीवन धीरे-धीरे फिर से अपनी लय पकड़ लेता है। मन शांत होने लगता है, तन फिर से ऊर्जा से भर उठता है और जीवन में नई ताजगी लौट आती है। आश्चर्य होता है कि टूटने के बाद कई बार इंसान पहले से अधिक मजबूत होकर उभरता है। प्रकृति भी यही सिखाती है—अक्सर सबसे सुंदर सृजन किसी टूटन के बाद ही जन्म लेता है।

समय, परिस्थितियाँ और जीवन की माँगें कभी-कभी ऐसे मोड़ ले आती हैं जहाँ जुदाई अपरिहार्य हो जाती है। अंत में साथ रह जाती है तन्हाई और कुछ नम आँखें। ऐसे समय में सबसे आवश्यक है कि हम अपने चरित्र और संवेदनाओं पर नियंत्रण बनाए रखें। दूसरों के व्यवहार के कारण अपने व्यक्तित्व को बदल देना सबसे बड़ी भूल होगी। शरीर से भी मजबूत बनिए और विचारों से भी। नए अवसर खोजिए। बचपन में सुनी चींटी और मकड़ी की कहानियों को फिर याद कीजिए, जिन्होंने बार-बार गिरकर उठना सिखाया था। अपने सपनों का दायरा बढ़ाइए। आपकी कार्यशक्ति स्वयं बदलने लगेगी। सपने अवश्य देखिए, लेकिन उनकी डोर हमेशा अपने हाथों में रखिए। ऐसा कभी न होने दीजिए कि कोई और आपके सपनों की दिशा और आपके जज़्बातों पर अधिकार कर ले। जब कोई रिश्ता समाप्त होता है, तब उसे केवल एक अंत मत समझिए। वह स्वयं को परखने, अपनी कमियों और खूबियों को पहचानने तथा नए सिरे से जीवन गढ़ने का एक दुर्लभ अवसर भी होता है। इसलिए देने की आदत विकसित कीजिए चाहे वह आपका बहुमूल्य समय हो, किसी अजनबी के लिए किया गया निस्वार्थ प्रयास हो या किसी निराश मन को दिया गया साहस।

स्वयं को पहले से अधिक मजबूत बनाइए। जीवन के प्रति जिजीविषा, संतुलन और सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ आगे बढ़िए। अपने आप को संभालिए और जहाँ संभव हो, दूसरों का भी संबल बनिए, क्योंकि जीवन का वास्तविक आनंद केवल पाने में नहीं, बल्कि देने में है। विश्वास रखिए, हर बिछड़ना अपने भीतर एक नई शुरुआत का बीज लेकर आता है। कभी-कभी किसी और से दूर होना ही हमें अपने सबसे करीब ले आता है। शायद इसी का नाम है "खुद से फिर मुलाकात"।

एक सफर : सुकून की ओर



श्री विजय कुमार शर्मा
(कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी)
शाखा कार्यालय, कटक

हिंदी में एक प्रसिद्ध कहावत है— "जीवन का दूसरा नाम सफर है।" वास्तव में यात्रा केवल एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचने का माध्यम नहीं होती, बल्कि यह मन को नई ऊर्जा, नए अनुभव और जीवन को एक नए दृष्टिकोण से देखने का अवसर भी प्रदान करती है। भागदौड़ भरे जीवन, दफ़्तर की व्यस्तताओं और अनगिनत जिम्मेदारियों के बीच कभी-कभी एक छोटा-सा विराम भी आत्मा को गहरा सुकून दे जाता है।

इसी भावना के साथ इस बार परिवार सहित जम्मू की यात्रा का अवसर मिला। माँ वैष्णो देवी के दर्शन की वर्षों पुरानी इच्छा पूर्ण होने जा रही थी। पहाड़ों की ओर बढ़ते हर कदम के साथ मन में उत्साह और श्रद्धा का भाव और प्रगाढ़ होता गया। ऊँचे-ऊँचे पर्वतों की चढ़ाई, ठंडी हवाओं का स्पर्श और चारों ओर गूँजता "जय माता दी" का उद्घोष यात्रा को केवल धार्मिक नहीं, बल्कि आध्यात्मिक अनुभव बना रहा था। थकान शरीर में अवश्य थी, पर मन में अद्भुत शांति और आत्मविश्वास का संचार हो रहा था। तभी अनुभव हुआ कि आस्था कठिन से कठिन मार्ग को भी सरल बना देती है।

कुछ समय बाद नासिक की यात्रा का अवसर मिला। संयोग से मौसम वर्षा का था। जैसे-जैसे वाहन आगे बढ़ रहा था, सड़क के दोनों ओर फैली हरियाली, पर्वतों से उतरते झरने



और हल्की वर्षा की फुहारें मन को बार-बार प्रकृति की ओर आकर्षित कर रही थीं। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो प्रकृति स्वयं अपने सौंदर्य का उत्सव मना रही हो।

नासिक पहुँचकर मंदिरों की घंटियों की मधुर ध्वनि, भीगे हुए प्राचीन मंदिर, शांत वातावरण और श्रद्धालुओं की आस्था ने मन को गहरे तक स्पर्श किया। वहाँ बिताया गया प्रत्येक क्षण यह अनुभव करा रहा था कि जीवन की वास्तविक समृद्धि केवल भौतिक उपलब्धियों में नहीं, बल्कि मन की शांति और अपने प्रियजनों के साथ बिताए गए ऐसे अनमोल पलों में भी होती है।

इन यात्राओं ने एक महत्वपूर्ण सीख दी कि जीवन केवल काम, लक्ष्य और जिम्मेदारियों का नाम नहीं है। अपने परिवार, प्रकृति और स्वयं के लिए भी समय निकालना उतना ही आवश्यक है। जब मन प्रकृति के सान्निध्य में कुछ पल ठहरता है, तब जीवन के प्रति दृष्टिकोण भी अधिक सकारात्मक और संतुलित हो जाता है।

आज भी जब कार्यालय की व्यस्तता मन को थका देती है, तब जम्मू के पर्वत, नासिक की हरियाली और वहाँ बिताए वे शांत क्षण स्मृतियों में ताज़ा हो उठते हैं। यही स्मृतियाँ फिर से जीवन को मुस्कराकर जीने की प्रेरणा देती हैं।

मेरा पहला मोबाइल – Moto G3



श्री पंकज कुमार जायसवाल
(वरिष्ठ लेखापरीक्षक)
शाखा कार्यालय, लखनऊ

अपनी बात कहाँ से शुरू करूँ, समझ नहीं आता। ऐसा लगता है मानो कल की ही बात हो, जब हम दोनों पहली बार मिले थे। दो अजनबियों की तरह, बेंगलूरू के एक पेइंग गेस्ट के कमरे में, एक ही बिस्तर के दो हिस्सों पर हमारी मुलाकात हुई थी। आज भी वह दिन मुझे अच्छी तरह याद है—3 फ़रवरी 2016।

हमारी यह मुलाकात भले ही अचानक नहीं थी, लेकिन यादगार अवश्य थी। उस समय मेरे पास नोकिया का साधारण कुंजीपटल वाला मोबाइल था, जबकि मुझसे छोटे-बड़े लगभग सभी लोग स्मार्टफोन का उपयोग करने लगे थे। मेरे मित्र और रिश्तेदार अक्सर उस पुराने मोबाइल को लेकर मेरा मज़ाक उड़ाते थे। हालाँकि, उनकी बातों का मुझ पर विशेष प्रभाव नहीं पड़ता था।

एक दिन कुछ मित्रों ने मुझे स्मार्टफोन के अनेक फायदे बताए। उनमें सबसे अधिक आकर्षक बात यह लगी कि घर बैठे ही रेल टिकट बुक किए जा सकते हैं। बस, उसी दिन मैंने निश्चय कर लिया कि अब मैं भी इस स्मार्ट दुनिया का हिस्सा बनूँगा।

अब प्रश्न था कि कौन-सा फोन लिया जाए। मेरी कोई विशेष माँग नहीं थी। बस इतना चाहता था कि वह भरोसेमंद हो, छोटी-छोटी बातों पर गरम न हो, बार-बार नखरे न दिखाए, अर्थात् बार-बार हैंग न हो और उसकी कीमत लगभग दस हजार रुपये के आसपास हो।

फिर क्या था! एक मित्र की सहायता से खोज शुरू हुई। सैमसंग, लेनोवो, मोटो, एचटीसी और कई अन्य कंपनियों के मोबाइल देखे गए। काफी सोच-विचार और तुलना के बाद आखिरकार मेरी पसंद तुम पर आकर ठहरी—Moto G3।

सच कहूँ तो तुमने कभी मुझे निराश नहीं किया। मेरी अपेक्षाओं पर तुम पूरी तरह खरे उतरे। कई वर्षों तक तुमने हर परिस्थिति में मेरा साथ निभाया। सफर हो, दफ्तर का काम हो या घर-परिवार से जुड़ाव हर जगह तुम मेरे विश्वसनीय साथी बने रहे।

समय के साथ तकनीक बदलती गई और एक दिन वह भी आया, जब तुम्हें अलविदा कहना पड़ा। सच तो यह है कि मैं तुम्हें छोड़ना नहीं चाहता था, लेकिन समय का यही नियम है हर साथ एक दिन बिछड़ता है।

हाँ, तुम मुझसे दूर ज़रूर हो गए हो, पर यादों से कभी अलग नहीं हुए। आज भी तुम्हारा नाम सुनते ही अनगिनत स्मृतियाँ ताज़ा हो जाती हैं। कभी गुस्से में तुम्हें पटक दिया हो या झुंझलाकर कुछ उल्टा-सीधा कह दिया हो, तो उसके लिए क्षमा करना। आखिर गलतियाँ तो इंसानों से ही होती हैं।

और हाँ, तुमसे मेरा रिश्ता आज भी कुछ वैसा ही है, जैसा लोग मुस्कराते हुए कहते हैं—"भाजपा और आडवाणी जी का।" दूरी भले आ गई हो, अपनापन अब भी बना हुआ है। नम आँखों से तुम्हें विदा, मेरे पहले स्मार्ट साथी!



स्वाभिमान



श्री दीपेंद्र देव शुक्ला
(लेखापरीक्षक)
शाखा कार्यालय, लखनऊ

तेरहवीं के भोज के लिए ब्राह्मण पंक्ति में बैठे थे। भोजन परोसा जा चुका था। जैसे ही "बोलो लक्ष्मी नारायण की जय!" का उद्घोष हुआ और सबने पहला ग्रास मुख में रखा, तभी पंक्ति में बैठे रामसुख काका के मुँह से अनायास निकल पड़ा—

"सब्जी में तीखापन कुछ ज़्यादा हो गया है। दीनानाथ जी होते, तो कोई-न-कोई उपाय निकाल ही लेते..."

वाक्य अधूरा ही रह गया। अगले ही क्षण उन्हें अपनी भूल का एहसास हो गया। आज यदि दीनानाथ जी होते, तो फिर यह तेरहवीं का भोज ही क्यों होता? आज तो उन्हीं की तेरहवीं थी।

दीनानाथ बाबू की आयु अड़सठ वर्ष थी। पत्नी और इकलौते पुत्र के निधन के बाद वे अपनी बहू सरला और पोते के साथ गाँव में रहते थे। पेशे से वे वकील थे, किंतु बढ़ती उम्र और पुत्र-वियोग के बाद उन्होंने कचहरी जाना छोड़ दिया था। अब घर का खर्च गाँव की खेती से ही चलता था।

गाँव में उनका बड़ा सम्मान था। किसी के घर विवाह हो, संकट हो या कोई सामाजिक आयोजन—दीनानाथ बाबू सबसे पहले पहुँचते। बिना किसी अपेक्षा के पूरी लगन से व्यवस्था संभालना उनका स्वभाव था। उनकी सूझ-बूझ और अनुभव से कई कठिन काम सहज हो जाते थे। यही उनका वास्तविक धन था।

जीवनभर की बचत उन्होंने बेटे की पढ़ाई-लिखाई में लगा दी थी। जो थोड़ी-बहुत राशि शेष थी, वह भी पुत्र के निधन के बाद धीरे-धीरे समाप्त हो गई। आर्थिक निर्भरता बढ़ी, तो घर में उनका सम्मान भी कम होने लगा।

बहू सरला कभी-कभी झुँझलाकर कह देती—
"बैठे-बैठे खाते रहते हैं। अब आपसे कोई काम भी नहीं होता। इस घर पर बोझ बन गए हैं।"

दीनानाथ बाबू कुछ नहीं कहते। बस चुपचाप अपना चश्मा उतारकर पोंछने लगते।

एक दिन घर में राशन कम पड़ गया। खेती की उपज बेचकर पोते की स्कूल फीस जमा कर दी गई थी। तनाव में सरला के मुँह से ऐसे शब्द निकल गए, जो किसी वृद्ध पिता के हृदय को चीर देने के लिए पर्याप्त थे—

"जब तक कमाते थे, तब तक ठीक था। अब तो समझ नहीं आता कि रोटी गले से कैसे उतरती होगी। मर ही जाएँ तो कम-से-कम एक पेट का खर्च तो कम होगा।"

उस रात दीनानाथ बाबू ने भोजन नहीं किया।
अगली सुबह वे अपने कमरे में गए और भीतर से कुंडी लगा ली।

सरला ने सोचा, दो-चार घंटे में बाहर आ जाएँगे। वह स्वयं भी अपने शब्दों को केवल क्षणिक क्रोध मानकर भूलना चाहती थी। समय बीतता गया। एक दिन... दो दिन... तीन दिन...

फिर भी दरवाज़ा नहीं खुला।
धीरे-धीरे दस दिन बीत गए।

कमरे से दुर्गंध आने लगी, तो पड़ोसियों ने पुलिस को सूचना दी। दरवाज़ा तोड़ा गया।

दीनानाथ बाबू अपनी चारपाई पर शांत लेटे थे। कमरे में सब कुछ वैसा ही था जैसा दस दिन पहले था। पास रखा पानी का गिलास भी भरा हुआ था; उसे किसी ने छुआ तक नहीं था।

तलाशी लेने पर तकिए के नीचे एक पॉलिथीन मिली। उसमें ₹21,500, तुलसी की एक माला और एक मुड़ा-तुड़ा कागज़ रखा था।

उस कागज़ पर काँपते हाथों से लिखा था—
“बेटी सरला, मुझे माफ़ कर देना।

तुम्हें मैं बोझ लगने लगा था, इसलिए यह बोझ स्वयं ही हटा रहा हूँ।

ये रुपये मेरे अंतिम संस्कार के लिए हैं, ताकि तुम्हें किसी के आगे हाथ न फैलाना पड़े।
जीवनभर लोगों से यही कहा कि मनुष्य को अपनी अर्थी का बोझ भी स्वयं उठाने लायक जीवन जीना चाहिए। आज अपनी ही बात निभाकर जा रहा हूँ।

पोते को मेरा आशीर्वाद देना। उसे बताना कि उसके दादाजी नाराज़ होकर नहीं गए, बस थक गए थे।”

पत्र पढ़ते ही सरला वहीं ज़मीन पर बैठ गई।

कमरे में गहरा सन्नाटा पसरा था। चारपाई पर निर्जीव शरीर था, पर तकिए के नीचे रखे वे रुपये मानो अब भी दीनानाथ बाबू के स्वाभिमान की गवाही दे रहे थे।

तेरहवीं का भोज चल रहा था। ब्राह्मण मौन होकर भोजन कर रहे थे।

रामसुख काका ने बिना कुछ कहे अपनी थाली का अगला कौर उठाया। उनकी आँखें नम थीं।

उन्हें लग रहा था कि दीनानाथ बाबू आज भी सबको एक अंतिम सीख दे गए हैं—

मनुष्य भूख से नहीं, अपमान से सबसे अधिक टूटता है; और स्वाभिमान, मृत्यु के बाद भी जीवित रहता है।



रिश्ता दिल का



श्रीमती अर्चिता मिश्र
(वरिष्ठ लेखापरीक्षक)
शाखा कार्यालय, कटक

दुनिया में प्रत्येक व्यक्ति की अपनी-अपनी इच्छाएँ होती हैं। कोई धन-संपत्ति चाहता है, कोई प्रसिद्धि, कोई सफलता, तो कोई केवल दो समय की रोटी। किंतु कुछ इच्छाएँ ऐसी भी होती हैं, जिनका संबंध केवल प्रेम और अपनत्व से होता है।

कोमल एक संपन्न परिवार की इकलौती बेटी थी। उसे धन-दौलत या ऐश्वर्य का कभी अभिमान नहीं था। उसके पास जीवन की लगभग हर सुविधा थी, लेकिन उसके मन में एक ऐसी कमी थी जिसे कोई वैभव पूरा नहीं कर सकता था—उसकी कोई बहन नहीं थी।

जब भी उसकी सहेलियाँ अपनी बहनों के साथ खेलतीं, त्योहार मनातीं या उनके साथ बिताए हुए सुंदर पल साझा करतीं, तब कोमल का मन उदास हो जाता। वह अक्सर सोचती कि काश! उसकी भी एक बहन होती, जिसके साथ वह हँसती, रूठती, झगड़ती और अपने सुख-दुख बाँटती।

एक वर्ष सरस्वती पूजा का दिन आया। चारों ओर उत्सव का वातावरण था। सभी बच्चे अपने भाई-बहनों के साथ प्रसन्नता से पूजा में सम्मिलित थे। यह दृश्य देखकर कोमल की उदासी और बढ़ गई। उसकी आँखें नम हो गईं।

उसके माता-पिता उसकी मनःस्थिति समझ गए। उसे प्रसन्न करने के लिए वे उसे बाहर घुमाने ले जाने लगे। जैसे ही वे घर से निकले, उन्होंने देखा कि मुख्य द्वार के पास लगभग आठ-नौ वर्ष की एक बालिका रो रही थी। उसके कपड़े फटे हुए थे, चेहरा आँसुओं से भीगा था और वह अत्यंत असहाय दिखाई दे रही थी।

कोमल ने उसके पास जाकर स्नेहपूर्वक पूछा, "तुम क्यों रो रही हो? तुम्हारा नाम क्या है?"

बालिका ने उत्तर दिया, "मेरा नाम गीता है। मैं अपने माता-पिता के साथ मेले में जा रही थी। रास्ते में दुर्घटना हो गई और दोनों की मृत्यु हो गई। मेरा कोई अपना नहीं है। मैं बिल्कुल अकेली हो गई हूँ।"

उसकी करुण कहानी सुनकर कोमल और उसके माता-पिता की आँखें भर आईं। उन्होंने गीता के माता-पिता का सम्मानपूर्वक अंतिम संस्कार कराया और उसकी हर संभव सहायता की।

जब सब लोग वापस लौटने लगे, तब कोमल ने अपने माता-पिता का हाथ पकड़कर कहा,
"मैं गीता को यहाँ अकेला छोड़कर नहीं जा सकती। यदि भगवान ने मुझे जन्म से बहन नहीं दी, तो शायद आज उन्होंने

मुझे मेरी बहन से मिलाने के लिए ही यहाँ भेजा है। आज से गीता मेरी बहन है।"

कोमल की यह बात सुनकर उसके माता-पिता भावुक हो उठे। उन्होंने मुस्कुराते हुए गीता को अपने साथ घर ले जाने का निर्णय लिया।

उस दिन कोमल को केवल एक बहन ही नहीं मिली, बल्कि गीता को भी एक नया परिवार मिल गया। दोनों के जीवन में स्नेह, अपनापन और खुशियाँ लौट आईं।

सच्चा रिश्ता केवल रक्त का नहीं होता, बल्कि प्रेम, विश्वास और अपनत्व का होता है। कई बार ईश्वर हमें वह देता है जिसकी हमने कल्पना भी नहीं की होती।



युद्ध परिणाम



श्री विजय कुमार शर्मा
(कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी)
शाखा कार्यालय, कटक

जब-जब रण का नाद उठा है,
मानवता का हृदय फटा है।
सीमा पर जब बारूद जला,
घर-घर आशा का दीप बुझा है।

किसी नगर की साँझ ढली है,
किसी आँगन की हँसी लुटी है।
रणभूमि में चाहे जयघोष हुआ हो,
कितनी आँखें हार चुकी हैं।

रण में केवल शस्त्र नहीं टूटते,
सपनों के भी दर्पण चूर होते हैं।
विजय-पताका भले लहराए,
कितने अपने सदा के लिए छूट जाते हैं।

किसी माँ का आँचल सूना,
किसी बहन की राखी रोई।
किसी अर्धांगिनी का सिंदूर मिटा,
किसी शिशु ने पिता को खोया।

किसी माँ ने द्वार सजाया,
किसी पत्नी ने दीप जलाया;
किन्तु वतन की मिट्टी ओढ़े
कोई अपना लौट न पाया।

किसी साथी ने राह निहारी,
लौटेगा वह—यह आस सँवारी;
किन्तु बंदूकों की गूँज के आगे
मौन हुई है प्रतीक्षा सारी।

युद्ध कभी उत्सव नहीं होता,
न मानवता का गौरव होता।
जहाँ लहू से धरा नहाती हो,
वहाँ सृजन का पर्व नहीं होता।

युद्ध केवल सीमा पर नहीं,
हर घर-आँगन तक पहुँचता है।
कभी महँगाई बनकर,
कभी अश्रु बनकर बरसता है।

धन-वैभव सब धूल हो जाता,
मानव कितना विवश हो जाता।
यदि विजय में मानवता हार जाए,
तो हर जय भी शून्य कहलाता।

आओ ऐसा विश्व बनाएँ,
जहाँ संवाद ही शक्ति बने;
शांति, सद्भाव और विश्वास से
मानवता का भविष्य गढ़े।



तेरे बिन यह ज़िंदगी



श्री अभिषेक कुमार
(सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी)
शाखा कार्यालय, लखनऊ

मेरे आँगन की वह हँसी कहाँ,
मेरे मन की वह खुशी कहाँ।
चार बरस का मेरा नन्हा चाँद,
तेरे बिन अब वह रोशनी कहाँ।

तेरी बातें, तेरी वह हँसी,
हर पल मन को याद आती हैं।
आँखें मूँदूँ जब भी मैं,
बस तेरी सूरत नज़र आती है।

नन्हे कदमों की वह आहट
अब भी कानों में गूँजती है।
तेरी छोटी-छोटी यादें
दिल में चुपचाप सिमटती हैं।

कहते हैं, समय के साथ
हर घाव कभी भर जाता है।

पर जिसने अपना बच्चा खोया हो,
वह कैसे फिर मुस्काता है?

मैं भी आगे बढ़ना चाहूँ,
जीवन को फिर सँवारूँ मैं।
पर तेरी यादों के आगे
हर दिन खुद से हारूँ मैं।

भीड़ में खड़ा हूँ लेकिन
भीतर से वीरान बहुत हूँ।
होंठों पर खामोशी है,
आँखों में तूफ़ान बहुत है।

एक पल तुझे भूल न पाऊँ,
तू साँसों में बसा हुआ है।
तू ही मेरा कल था, बेटा,
तू ही मेरा जहाँ हुआ है।

तेरे खिलौने, तेरी चप्पल,
मुझसे अब भी बातें करते हैं।
दीवारों पर खींची लकीरें
तेरे होने का एहसास कराती हैं।

रात ढले जब नींद न आए,
मन तुझ तक ही चला जाता है।
एक पिता का टूटा हुआ दिल
बस तेरा नाम पुकारता है।

भूलना तुझको चाहूँ भी तो
दिल यह मान नहीं पाता।
तू दूर गया है आँखों से,
दिल से कभी दूर नहीं जाता।

तेरे यूँ चले जाने के ग़म को
चुपचाप सीने में ढोता हूँ।
तेरी यादों को ओढ़े हर दिन
थोड़ा-थोड़ा रोता हूँ।

तू जहाँ भी हो, खुश रहना,
बस इतनी अरदास मेरी।
तेरे बिना जो बीत रही है,
हर साँस बनी है याद तेरी।



जीवन का सत्य



श्री नवीन कुमार
(लेखापरीक्षक)
शाखा कार्यालय, कटक

चार कंधों पर डोली उठती,
चार कंधों पर अर्थी भी।
जीवन के दो छोर समेटे,
चलती दोनों चुपचाप ही।

फूल डोली पर भी सजते,
फूल अर्थी पर भी चढ़ते।
एक ओर मंगल गीत गूँजते,
दूजी ओर नयन ही झरते।

डोली पिया के घर जाती है,
अर्थी उसी घर से उठती है।
माँग दोनों की भरी होती है,
चूड़ियाँ दोनों ने पहनी हैं।

अंतर केवल इतना-सा है—
एक जहाँ में जाती है,
एक जहाँ से जाती है।

एक नए जीवन का स्वागत करती,
एक जीवन-यात्रा पूरी कर जाती है।
एक मुस्काकर विदा होती है,
एक अलविदा कह जाती है।

जीवन का यह सत्य अनोखा,
क्षणभंगुर हर श्रृंगार यहाँ।
आना-जाना, मिलना-बिछुड़ना—
यही समय का शाश्वत विधान



माँ!



सुश्री नम्रता कोली
(पुत्री श्री एम के कोली, व ले प अ)
केन्द्रीय कार्यालय

हर दिन मन में एक ही प्रश्न उभरता है,
जिसे मैंने बड़ी झिझक के साथ
अपनी माँ से पूछा—

"माँ! मैं तुम्हारी जैसी कैसे बन पाऊँगी?"

अपने बिखरे बालों की परवाह किए बिना
तुम हर सुबह मेरे बाल संवारती थीं।
अपने से पहले मेरा ध्यान रखना,
माँ! मैं यह सब कैसे कर पाऊँगी?

खुद भूखी रहकर भी
सबका पेट भर देती थीं।
अपने हिस्से की रोटी भी
मुस्कुराकर मुझे खिला देती थीं।
माँ! तुम यह सब कैसे कर लेती थीं?

जब भी तुमने मुझे
नई फ्रॉक पहनाकर आईने के सामने सजाया,
हर बार मैंने तुम्हें
उसी पुरानी साड़ी में पाया।

अपनों की मुस्कान में
अपनी खुशी ढूँढ़ लेना—
माँ! तुम यह कला कहाँ से लाती थीं?
इच्छाएँ शायद तुम्हारे हिस्से आई ही नहीं,
तुम्हारे हिस्से तो केवल जिम्मेदारियाँ थीं।

अपनी हर ख्वाहिश को चुपचाप समेटकर
तुमने परिवार के सपनों को अपना बना लिया।
माँ! हर बार तुम सब कुछ
इतनी सहजता से कैसे कर लेती थीं?



लेकिन तुमने मुझे
इन प्रश्नों में उलझने नहीं दिया।
जो सपने तुम पूरे न कर सकीं,
उन्हें पूरा करने का साहस मुझे दिया।

उड़ने के लिए पंख दिए,
आगे बढ़ने का विश्वास दिया।
आज मैं भी एक माँ हूँ।

अब तुम्हारे हर त्याग का अर्थ
धीरे-धीरे समझने लगी हूँ।

बस एक प्रार्थना है—
जैसे आज तक मेरा हाथ थामे रखा है,
वैसे ही जीवनभर
मेरी माँ बनी रहना।

प्रार्थना



मौ. फईम
(वरिष्ठ लेखापरीक्षक)
शाखा कार्यालय, बेंगलूरू

हे मानवता के परमपिता,
सब पर अपना उपकार करो।
विघ्न हरों, सुख-शांति बरसाओ,
मंगलमय संसार करो।

जिस माटी में जन्म लिया है,
जिसने जीवन का मान दिया,
उस पावन मातृभूमि के कण-कण को
सुख, समृद्धि का वरदान दिया।

धरती, अम्बर, पर्वत, नदियाँ—
सब तेरी ही अनुपम छाया हैं।
माता-पिता और गुरुजनों में
तेरी ही पावन माया है।

हर प्राणी में तेरा अंश है,
हर हृदय तेरा धाम बने।
प्रेम, दया और करुणा से
मानव जीवन धन्य बने।

मन से सारे द्वेष मिटें,
अहंकार का अंधकार हरे।
सत्य, सेवा और सद्भावना से
हर जन का जीवन निखरे।

ऐसी शक्ति हमें प्रदान करो,
कर्तव्य-पथ से न डिग पाएँ।
मानवता की सेवा करते हुए
जीवन को सार्थक बना जाएँ।

हे करुणामय पालनहारे,
सबका तुम उद्धार करो।
विघ्न हरों, सुख-शांति बरसाओ,
मंगलमय संसार करो।



अटल



श्री आनंद राघव मिश्र
(लेखापरीक्षक)
शाखा कार्यालय, कटक

हर जंग जीत सकता हूँ,
हर हार सह सकता हूँ।
हर पल खड़ा हूँ तत्पर,
हर वार सह सकता हूँ।

लोगों के लाख ताने,
हर बार सुन सकता हूँ।
अपनों के दिए ज़ख्म भी,
मुस्काकर सह सकता हूँ।

मैं युद्ध में अडिग रहकर,
हर रण जीत सकता हूँ।
रिश्तों की तलवारों का भी
हर वार सह सकता हूँ।

मैं जीत का अभ्यासी हूँ,
हर खेल खेल सकता हूँ।
अश्वों-सा निर्भीक धावक,
हर दौड़ जीत सकता हूँ।



हर कदम बिछे हैं काँटे,
फिर भी निरंतर चलता हूँ।
परिवार की खातिर अपने
हर दर्द को मैं सहता हूँ।

हाँ, रो नहीं मैं सकता,
थककर भी मुस्काता हूँ।
लंकेश-सी दृढ़ जिद लेकर,
स्वयं से युद्ध लड़ जाता हूँ।

नभ-सा विशाल हृदय लेकर,
अंगारों में भी पलता हूँ।
कंधों पर जिम्मेदारियों का
हर भार सहज सँभालता हूँ।

चुपचाप पीकर आँसू,
मुस्कानें बाँट रहा हूँ।
कर्तव्य की कठिन डगर पर,
स्वयं को ही गढ़ रहा हूँ।

तूफ़ानों से आँख मिलाने
का साहस रखता हूँ।
स्वाभिमान की रक्षा में
मिट जाने का प्रण रखता हूँ।

मैं साहस का प्रमाण हूँ,
संघर्षों का सम्मान हूँ।
जो टूटकर भी न बिखरे,
मैं वही अटल चट्टान हूँ।

तू भी नहीं, मैं भी नहीं



मोहम्मद इमरान ख़ान
(सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी)
शाखा कार्यालय, लखनऊ

बशर हैं हम, तो भूल होना भी लाज़िमी है,
न ख़ुदा का दर तेरा है, न मर्तबा मेरा है।
उँगलियाँ तो उम्रभर उठती रहीं एक-दूसरे पर,
मगर अपनी कमियों को आईना दिखाता
तू भी नहीं, मैं भी नहीं।

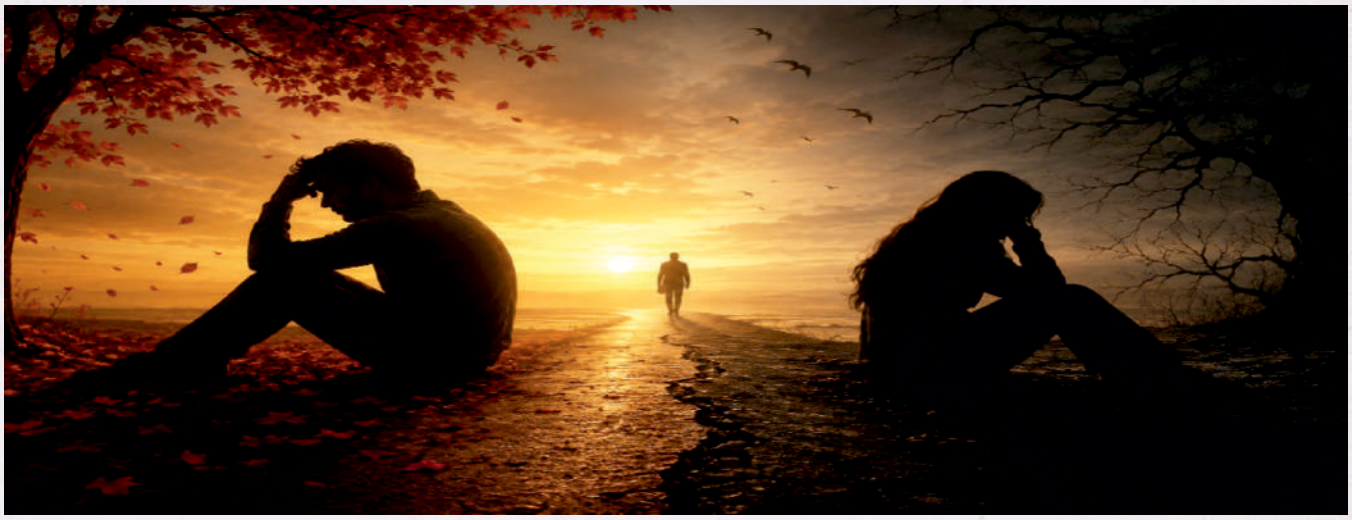
बात बस इतनी-सी थी, जो दिल में दबी रह गई,
खुलकर कभी कुछ कह पाया
तू भी नहीं, मैं भी नहीं।

गलतफ़हमियों ने दूरियाँ तो पैदा कर दीं,
मगर बुरा था कौन?
तू भी नहीं, मैं भी नहीं।

रिश्ते बच सकते थे,
अगर थोड़ा-सा झुक जाते।
अपनी ज़िद से आगे बढ़ पाया
तू भी नहीं, मैं भी नहीं।

अब खामोशी ही दरमियाँ है,
दिल की आवाज़ सुन पाया
तू भी नहीं, मैं भी नहीं।

कभी तू रूठ गया,
कभी मैं ख़ामोश रहा।
वक़्त के साथ खुद को बदल पाया
तू भी नहीं, मैं भी नहीं।



चाहा तो हमने दोनों ने
कि दूरियाँ मिट जाएँ,
मगर पहला क़दम बढ़ा पाया
तू भी नहीं, मैं भी नहीं।

आईना जब भी सामने आया,
नज़रें अपनी ही झुक गईं।
सच का सामना कर पाया
तू भी नहीं, मैं भी नहीं।

आज तन्हाई में बैठकर
बस इतना एहसास हुआ—
वक़्त रहते समझ पाया
तू भी नहीं, मैं भी नहीं।

'इमरान', अपने ही गुरूर में
उलझे रहे उम्रभर।
रिश्तों को दिल से निभा पाया
तू भी नहीं, मैं भी नहीं।

सपने



श्री सुबोध कुमार पात्रा
(सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी)
शाखा कार्यालय, बेंगलूरू

मैं रात के सन्नाटों में
कुछ उम्मीदें लेकर सोता हूँ,
बचपन में देखे उन सपनों को
आज भी जी-जान से संजोता हूँ।

राहों में कई बार गिरा हूँ,
ठोकरें भी अनगिनत खाई हैं;
पर हर बार स्वयं को संभालकर
नई उम्मीदों के साथ उठ आया हूँ।

जिस महफ़िल में सम्मान न मिले,
वहाँ अब ठहरना छोड़ दिया है।
खामोशी से मुस्कुराकर
अपना रास्ता मोड़ लिया है।

मूर्खताओं से अंतहीन बहस करने के बजाय
अब मौन रहना बेहतर लगता है;
समय और ऊर्जा को
सही दिशा में लगाना अच्छा लगता है।

जो मेरे जीवन जीने का सलीका
कभी समझ ही न सके,

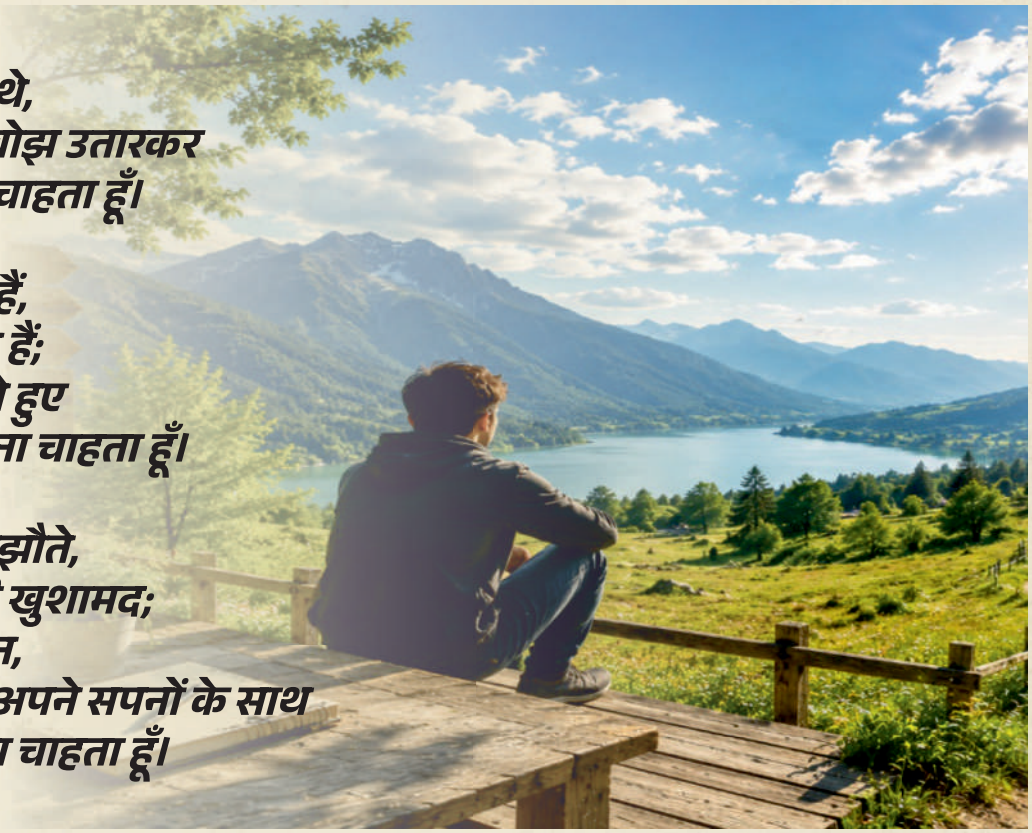
उन्हें शिकायतों में नहीं,
अपनी यादों से विदा कर दिया है।

आपकी कहानी में
किरदार अनेक होंगे,
मैं तो बस अपने हिस्से के
किरदार को सच्चाई से निभाना चाहता हूँ।

हर व्यक्ति का जीवन जीने का
अपना-अपना तरीका है;
मैं भी अब दूसरों की अपेक्षाओं से नहीं,
अपने विश्वासों के अनुसार जीना चाहता हूँ।

दुनिया की भागदौड़ में
हर कोई व्यस्त दिखाई देता है;
मैं व्यस्त दिखने से अधिक,
अपने उद्देश्य में तल्लीन रहना चाहता हूँ।

जो लोग मुझे
मझधार में छोड़ गए थे,
उनकी स्मृतियों का बोझ उतारकर
अब आगे बढ़ जाना चाहता हूँ।



जीवन के अनेक रंग हैं,
अनगिनत उसके ढंग हैं;
हर अनुभव से सीखते हुए
जीवन को भरपूर जीना चाहता हूँ।

बहुत निभा लिए समझौते,
बहुत कर ली सबकी खुशामद;
अब अपने स्वाभिमान,
अपने सिद्धांतों और अपने सपनों के साथ
अपनी शर्तों पर जीना चाहता हूँ।

नदियों की पुकार



श्री सक्षम पाण्डेय
(लेखापरीक्षक)
शाखा कार्यालय, लखनऊ

कल-कल, छल-छल बहता पानी,
देखो कितना न्यारा है।
हम सबकी लापरवाही ने
इसको दूषित कर डाला है।

नदियों की पावन जलधारा,
जीवन का आधार रही।
आज वही गंदगी ढोती,
मानो स्वयं लाचार हुई।

कारखानों का विषैला पानी
इसमें आकर मिल जाता है।
निर्मल जल को दूषित करके
जीवन संकट में लाता है।

कल-कल, छल-छल बहता पानी,
देखो कितना न्यारा है।
हम सबकी लापरवाही ने
इसको दूषित कर डाला है।

कचरे के ढेर तैरते हैं,
मछलियाँ तड़प-तड़प मरती हैं।
निर्मल जल की आस लिए
जीवन से प्रतिदिन हारती हैं।

नालों का गंदा जल इसमें
रोज़ आकर समाता है।
निर्मलता का नाम अब केवल
इतिहासों में रह जाता है।

कभी गंगा-यमुना की महिमा
जग में गाई जाती थी।
हर बूँद में श्रद्धा, आस्था की
गहराई पाई जाती थी।

आज वही पावन जलधारा
मानव से पुकार रही।
अपने अस्तित्व की रक्षा को
मौन व्यथा वह कह रही।

कल-कल, छल-छल बहता पानी,
देखो कितना न्यारा है।
हम सबकी लापरवाही ने
इसको दूषित कर डाला है।

यदि न बची यह निर्मल धारा,
कैसा जीवन रह जाएगा?
निर्मल जल के बिना धरा पर
जीवन कैसे बच पाएगा?

आओ मिलकर शपथ उठाएँ,
फिर से इसे स्वच्छ बनाएँ।
हर बूँद का सम्मान करें,
प्रकृति का ऋण चुकाएँ।

प्रकृति के इस अमूल्य रूप को
अब हम सबको बचाना है।
जन-जन में स्वच्छता का
नव संदेश फैलाना है।

जो धारा भारतभूमि में
घर-घर पूजी जाती है,
उसे निर्मल रखना हम सबकी
साझी जिम्मेदारी है।

कल-कल, छल-छल बहता पानी,
देखो कितना न्यारा है।
हम सबकी लापरवाही ने
इसको दूषित कर डाला है॥



नारी : संघर्ष और साहस



श्री अरुण कुमार
(सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी)
शाखा कार्यालय, बेंगलूरु

नारी केवल एक नाम नहीं,
जीवन का आधार महान है।
ममता, त्याग और शक्ति का
वह अनुपम वरदान है।

वह जन्म दे, संसार सँवारे,
सपनों को आकार देती है।
अपने आँचल की छाया में
हर जीवन को संवार देती है।

फिर भी जन्म से पहले ही
क्यों उस पर प्रश्न उठाए जाते हैं?
कोख में ही न जाने कितने
मासूम सपने मिटाए जाते हैं।

बचपन से बंधनों की दीवारें,
हर कदम पर पहरे हैं।
उड़ने की चाह लिए भी उसके
आसमान बहुत गहरे हैं।

राहों में बुरी नज़रें मिलतीं,
मन में डर घर कर जाता है।

सम्मान की एक चाह लिए
वह हर दिन आगे बढ़ जाती है।



घर की चौखट, घर की जिम्मेदारी,
सबकी खुशियों का आधार वही।
थककर भी मुस्कान सजाती,
दुख कहे बिना स्वीकार वही।

फिर भी वह साहस की प्रतिमा,
हर तूफ़ान से लड़ जाती है।
अपने आँसू स्वयं छिपाकर,
हर आँगन को रोशन कर जाती है।

नारी बोझ नहीं, सम्मान है,
जीवन का सच्चा अभिमान है।
जिस घर, समाज में मान मिले,
वहीं सच्ची मानवता का स्थान है।

आओ मिलकर प्रण यह लें,
हर बेटी का मान बढ़ाएँ।
शिक्षा, सुरक्षा और सम्मान देकर
सशक्त भारत का स्वप्न सजाएँ।

सिंहनाद



श्री अभिषेक कुमार
(लेखापरीक्षक)
शाखा कार्यालय, कटक

सिंहनाद करो, अब मत तनिक संकोच करो,
अंगद-सा अटल कदम बढ़ाकर शत्रु का प्रतिरोध करो।
आर्यभूमि के वीर सपूतो, अब साहस की बारी है,
तोपों का रुख मोड़ दो, अब शत्रु की तैयारी है।

कब तक माँओं की गोद उजड़ती जाएगी?
कब तक वीरों की गाथा अश्रुओं में गाई जाएगी?
अब न रुको, अब न झुको, शक्ति तुममें सारी है,
तोपों का रुख मोड़ दो, अब शत्रु की बारी है।

लहू की तपिश को अब यूँ व्यर्थ न जाने दो,
राष्ट्ररक्षा के संकल्प को अडिग हो निभाने दो।
उठो, ललकारो अन्याय को, यही समय पुकार रहा,
तोपों का रुख मोड़ दो, अब विजय-द्वार सँवार रहा।

बहुत हुए बलिदान वतन के अमर दीवानों के,
अब समय है साहस, शौर्य और दृढ़ संकल्पों के।
आसमान पर लिख दो फिर से भारत की जयकारी है,
तोपों का रुख मोड़ दो, अब शत्रु की बारी है।

काँप उठेगी धरा भी सैनिक, तेरे अटल जुनून से,
गूँज उठेगा हर सीमा-प्रांत तेरे अमर सुकर्मों से।
मातृभूमि के वीरों से हर बाधा हारी है,
तोपों का रुख मोड़ दो, अब शत्रु की बारी है।



हिंदी पखवाड़ा 2025 की झलकियां
















महानिदेशक
110054
2025


DGAFC






कार्यालय : महानिदेशक लेखापरीक्षा
वित्त एवं संपर्क, दिल्ली–110054











12 'प्र'
से किया जा सकता है
राजभाषा हिंदी का समुचित विकास

गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा राजभाषा हिंदी के समुचित विकास और प्रचार-प्रसार के लिए 12 'प्र' की एक विशेष रणनीतिक रूपरेखा तैयार की गई हैं। सरकारी कार्यालयों और कामकाज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने वाले ये 12 'प्र' निम्नलिखित हैं:



1. **प्रेरणा** – अधिकारिंयों और कर्मचारिंयों को स्वेच्छा से हिंदी में कार्य करने के लिए प्रेरिंत करना।
2. **प्रोत्साहन** – हिंदी कार्य को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न योजनाएं लागू करना।
3. **प्रेम** – भाषा के प्रति लगाव और राष्ट्रप्रेम की भावना जागृत करना।
4. **पुरस्कार (प्राइज़)** – उत्कृष्ट कार्य करने वाले विभागों व कार्मिकों को सम्मानित करना (जैसे कीर्ति व गौरव पुरस्कार)।
5. **प्रशिक्षण** – कर्मचारिंयों को हिंदी भाषा, हिंदी टंकण (टायपिंग) और कंप्यूटर टूल्स का प्रशिक्षण देना।
6. **प्रयोग** – दैनिक फाइलों, नोटिंग और प्रशासनिक कार्यों में हिंदी का वास्तविक उपयोग बढ़ाना।

7 **प्रचार** – विभिन्न माध्यमों से राजभाषा के महत्व का प्रसार करना।

8 **प्रसार** – देश के सभी हिस्सों और केंद्रीय कार्यालयों में हिंदी की पहुंच का दायरा बढ़ाना।

9 **प्रबंधन** – राजभाषा कार्यान्वयन समितियों और प्रशासनिक तंत्र का सुचारू प्रबंधन करना।

10 **प्रोन्नति (प्रमोशन)** – राजभाषा संवर्ग के कर्मियों के करियर और पदोन्नति का ध्यान रखना।

11 **प्रतिबद्धता** – संवैधानिक नियमों और लक्ष्यों को पूरा करने के प्रति संकल्पबद्ध रहना।

12 **प्रयास** – राजभाषा नीति के लक्ष्यों को हासिल करने के लिए निरंतर और अथक कोशिशें करना।



सरकारी कामकाज में टिप्पण/आलेखन

मूल रूप से हिंदी में करने के लिए
प्रोत्साहन पुरस्कार योजना

के अंतर्गत पुरस्कृत अधिकारी/कर्मचारी-

क्र. सं.	अधिकारी/कर्मचारी का नाम	पदनाम	पुरस्कार राशि	पुरस्कार की श्रेणी
1.	श्री आदेश कुमार	डी.ई.ओ.	₹ 5000/-	प्रथम
2.	श्री संतोष कुमार	लेखापरीक्षक	₹ 5000/-	प्रथम
3.	श्री कप्तान सिंह	लेखापरीक्षक	₹ 3000/-	द्वितीय
4.	श्री लोकेश कुमार दीक्षित	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	₹ 3000/-	द्वितीय
5.	श्री नीरज कुमार शर्मा	लेखापरीक्षक	₹ 3000/-	द्वितीय
6.	श्रीमती सतविंदर कौर	सहायक पर्यवेक्षक	₹ 2000/-	तृतीय
7.	श्री भगवत दयाल	लेखापरीक्षक	₹ 2000/-	तृतीय
8.	श्री आशीष कुमार	लेखापरीक्षक	₹ 2000/-	तृतीय
9.	श्री सुरेश	लिपिक	₹ 2000/-	तृतीय
10.	श्री उमेद सिंह	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	₹ 2000/-	तृतीय

भारत सरकार
गृह मंत्रालय
राजभाषा विभाग
(सदैव ऊर्जावान; निरंतर प्रयासरत)

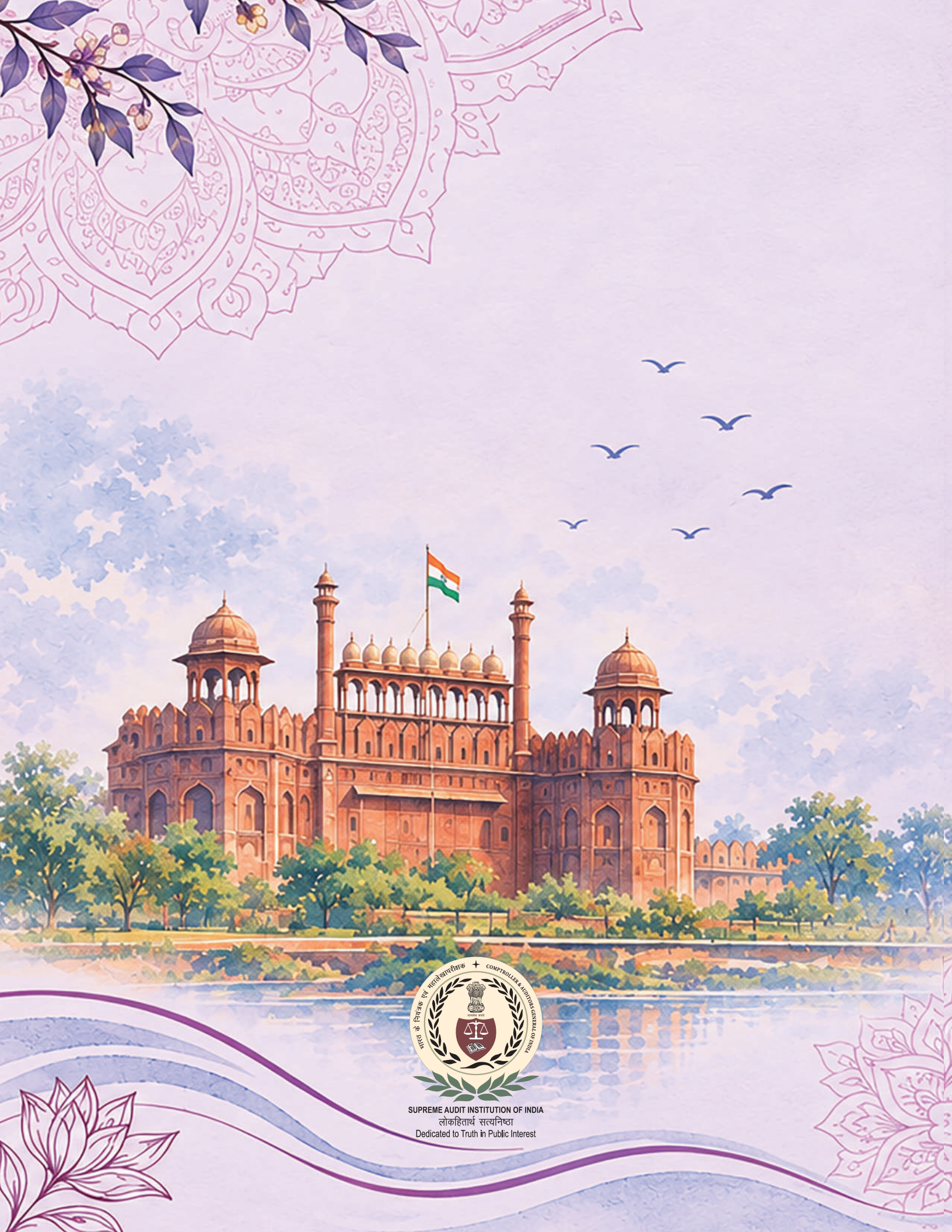
राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 से 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम, केंद्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरंतर निगरानी से; अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से; प्रशिक्षण और प्राइज से अपने साथियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाये रखेंगे, उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे; अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए; अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल और प्रभावशाली बनाते हुए राजभाषा हिंदी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ाएंगे। हम राजभाषा के संवर्द्धन के प्रति सदैव ऊर्जावान और निरंतर प्रयासरत रहेंगे।

जय राजभाषा! जय हिंद!


राष्ट्रीय गीत के 150 वर्ष
14-15 सितंबर 2026, मुंबई (महाराष्ट्र)


एवं छठा अखिल
भारतीय राजभाषा सम्मेलन
सिडको एग्जिबिशन सेंटर, नवी मुंबई
14-15 सप्टेंबर / सितंबर, 2026



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest